श्रीः ।

श्रीमद्भिषक्छिरोमणिकविवरबोपदेवप्रणीत-

बोपदेववैद्यकशतक ।

मुरादाबादनिवास्यायुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृत

भाषाटीकासहित ।

जिस्को

वैद्यजनोंके हितार्थ

वैश्यवंशोत्पन्न–

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

स्वकीय " श्रीवेंकटेश्वर " छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५३ शके १८१८ ।

P.B.
SANSKRIT
189

...का रजिष्टरी हक यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है.

P. B. SANSKRIT 189

22500848429

P. B. Sample. 189
WELLCOME INSTITUTE LIBRARY
33254

श्रीः ।

श्रीमद्भिषक्छिरोमणिकविवरबोपदेवप्रणीत-

बोपदेववैद्यकशतक ।

मुरादाबादनिवास्यायुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृत

भाषाटीकासहित ।

जिसको

वैद्यजनोंके हितार्थ

वैश्यवंशोत्पन्न-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

स्वकीय " श्रीवेंकटेश्वर " छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५३ शके १८१८ ।

इस पुस्तकका रजिष्टरी हक यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है.

श्रीः ।

बोपदेवशतककी अनुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठांक
अथ चूर्णाधिकार १	
मंगलाचरण	१
विजयचूर्ण....	१
लवंगादिचूर्ण	२
चातुर्जातादिचूर्ण	३
धान्यादिचूर्ण	,,
नारायणचूर्ण	४
नारसिंहचूर्ण	५
भाङ्गर्यादिचूर्ण	,,
भास्करचूर्ण	६
आभादिचूर्ण	६
हिंग्वादिचूर्ण	७
खांडवचूर्ण	८
शार्दूलचूर्ण....	,,
अग्निमुखचूर्ण	९
सितोपलादिचूर्ण	१०
पाठादिचूर्ण	,,
अथगुटिकाधिकार २	
कृष्णमोदक	११
माणिभद्रमोदक	
हिंग्वादिगुटिका	१२
दार्व्यादिगुटिका	,,
सूरण वटिका	१२
कांकायनगुटिका	१३
त्रिजातादिमोदक	,,
दीप्यादिकमोदक....	१४
तालीसादिमोदक	,,
शम्बूकादिवटी	१५
कैशोरकगुग्गुल	,,
योगराजगुग्गुल	१६
आभादिवटक	,,
खदिरीगुटिका	१७
कोलादिगुटी	१८
दन्त्यादिवटक	,,
मधुवटक	१९
ओजस्करीगुटिका	,,
अंजनीगुटिका	२०
अथावलेहाधिकार ३	
कूष्माण्डावलेह	२१
अगस्तिहरीतक्यवलेह	,,
आर्द्रकावलेह	२२
भार्ङ्गीशिवानामावलेह	,,
कंसहरीतकीनामावलेह	२३
वासाहरीतक्यवलेह	२४

चित्रकहरीतकीनामावलेह २४
दन्तीशिवानामावलेह २५
व्याघ्रीपथ्यावलेह .... ,,
कण्टकारीअवलेह २६
कुटजाष्टकावलेह .... ,,
खदिराद्यवलेह २७
कल्याणकावलेह २८
च्यवनप्राशावलेह .... ,,
अक्षावलेह २९
पंचजीरकावलेह .... ,,

अथघृताधिकार ४

षट्पलघृत ३०
वज्रघृत ३१
रास्नादिघृत .... ,,
कल्याणघृत ३२
फलघृत .... ,,
पञ्चगव्यघृत ३३
बिन्दुघृत ३३
जात्यादिघृत ३४
चाङ्गेरीघृत .... ,,
धन्वन्तरिघृत .... ,,
आटरूषघृत ३५
सुकुमारकघृत .... ,,
बृहत्पञ्चमूलादिघृत ३६
अष्टाङ्गघृत ३७
तिक्तघृत .... ,,
नारसिंहघृत ३८

अथ तैलाधिकार ५

प्रसारिणीतैल ३९
माषतैल ४०
क्षारतैल ४१
शतावरीतैल .... ,,
वज्रतैल ४२
नारायणतैल .... ,,
बलातैल ४३
अन्वासनतैल ४४
षड्बिन्दुतैल .... ,,
लाक्षातैल ४५
गुडूच्यादितैल ४६
महानीलतैल .... ,,
ब्राह्मीतैल ४७

अथक्काथाधिकार ६

महाक्काथ ४७
त्रिरास्नादिक्काथ ४८
मूर्वादिक्काथ ४९
दार्वादिनिरूह .... ,,
द्राक्षादि ५०
भूनिम्बादि .... ,,
विषाण्यादिक्काथ .... ,,
शृङ्ग्यादिक्काथ ५१
पथ्यादि और हिमादि .... ,,
अतिविषादिकषाय .... ,,
मुस्तादिक्काथ ५२
गोक्षुरादिक्काथ .... ,,

हरिद्रादिक्वाथ	५२	शुंठीक्वाथ	,,
दर्प्यादिक्वाथ	,,	दूसराशुंठीक्वाथ	,,
दार्व्यादि	५३	रास्नादि	,,
त्रिफलादि	,,	तीसराशुण्ठ्यादि	,,
चन्दनादि	,,	फल्ग्वादि	,,
व्याघ्र्यादि	,,	धात्रीक्वाथ	,,
शृङ्ग्यादि	५४	छिन्नादि	,,
यवादि	,,	पालिंद्यादि	,,
व्याघ्र्यादि	,,	अमृतादि	,,
आटरूषकक्वाथ	५५	शृंग्यादि	,,
द्राक्षादिकक्वाथ	,,	शेष	५७
तिलक्वाथ	५५		

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीत्रैलोक्यपतये नमः ।

बोपदेवशतक.

(वैद्यकग्रंथ.)

मंगलाचरणम् ।

त्रिभुवनजनरोगग्रामसंग्रामजेताऽ-
मृतभृतधृतकुम्भात्पूर्णहस्तायुधश्रीः ॥
अमरमथितदुग्धांभोधिलब्धोदयोऽसौ
दलयतु दुरितौघानाद्यवैद्याधिपो वः ॥ १ ॥

भैषज्यद्विजतारकाधिपतिरप्येतिक्षपेशः क्षयं
क्षीणांगः शरणंशरण्यगणनाग्रण्यंयमार्त्तिच्छिदम् ।
तंदेवंतरणिंप्रणम्यसरुजांसौख्यायकुर्मः शत-
श्लोकींषोडशकोक्तचूर्णगुटिकालेहाज्यतैलोदकाम् १

अर्थ–औषधि, ब्राह्मण और नक्षत्रोंका अधिपति चन्द्रमा, क्षयरोगसे दुर्बलहोकर दुःखको दूरकरनेवाला, और शरण आयेहुएकी रक्षाकरनेवाला, जिसदेवकी शरण गयाथा, उस सूर्यदेवको नमस्कारकर रोगीमनुष्योंके सुखकेलिये, सोलहसोलह श्लोकोंसे चूर्ण, गोली, अवलेह, घी, तेल और क्वाथका निरूपण करनेवाला, यह शतश्लोकीनामक ग्रन्थ रचताहूँ ॥ १ ॥

विजयचूर्ण ।

श्रीदीप्योग्राग्निहिंगुद्विविषमिशिवृकीचव्यातिक्तापटूनि
ग्रन्थिक्षारेन्द्रजात्रिकत्रिकामातीविजयः सोष्णकैरण्डतैलः

हन्त्यर्शःकासगुल्मग्रहणिकृमिरुजः पांडुरुग्भूतशूल-
श्वासप्लीहप्रमेहाञ्ज्वरमरुचिमुदावर्त्तवध्मामवातान्॥२॥

अर्थ–बेलगिरि, अजमोद, वच, चीता, हींग, कालाअतीस, सफेदअतीस, सौंफ, पाठ, चव्य, कुटकी, पंचलवण (सैंधानोन कालानोन, बिडनोन, औद्भिदनोन, सामुद्रनोन), पीपलामूल, जवाखार, इन्द्रजौ, त्रिफला (हरड, बहेडा, आमला) त्रिकुटा, (सोंठ, मिरच, पीपल), और त्रिसुगंध (इलायची, दालचीनी, तेजपात) इन सब औषधियोंको समान भागले-कर चूर्ण करले, इसचूर्णको गरमजल और अण्डीके तेलमें मिला-कर खानेसे बवासीर, खांसी, गुल्म, संग्रहणी, कृमि, पाण्डु-रोग, शूल, श्वास, प्लीहा, प्रमेह, ज्वर, अरुचि, उदावर्त्त, वध्म और आमवात रोग दूर होवै है ॥ २ ॥

लवंगादि चूर्ण।

अर्धश्वेतंलवंगागरुतगरतुगात्वक्कणाशीतशुण्ठी-
जीरोशीरेभजातीफलनलदजलेलोत्पलैलेन्दुचूर्णम् ।
दोषार्त्तौऽल्पास्रशुक्रज्वलनबलरुचौगुल्ममेहप्रतिश्या-
हिक्काकासातिसारक्षयतमकगलोरोग्रहेषुग्रहण्याम्॥३॥

अर्थ–लौंग, अगर, तगर, वंशलोचन, दालचीनी, पीपल' लालचन्दन, सोंठ, जीरा, सुगंधवाला, नागकेशर, जायफल, वालछड, खस, शीतलचीनी, कुमुद, इलायची और भीमसेनी कपूर यह सब औषधि समानभागले कूट पीसकर चूर्ण बनाले और सब चूर्णसे अर्द्धभाग मिश्री लेवै, फिर इस चूर्णको सेवन करनेसे वात, पित्त और कफकी पीडा रुधिरविकार, वीर्य-की हीनता, मन्दाग्नि,बलकी क्षीणता, अरुचि,गुल्म, प्रमेह, प्रति-श्याय (जुकाम), हिचकी, खांसी, अतिसार, क्षय, तमक

(श्वासरोग विशेष) गल और उरग्रह तथा संग्रहणी रोग दूर होताहै ॥ ३ ॥

चातुर्जातादिचूर्ण ।

चातुर्जाततुगाद्विजरिकधनातालीससारादशाक्षा वृक्षाम्लकपित्थषट्कटुकवर्याम्लाद्विदीप्याश्वषट् । चूर्णस्त्वल्पसितोबलाग्निरुचिभाकृत्प्लीहमूढानिल- श्वासार्शःकसनव्यथाज्वरवमीहृत्कंठजिह्वार्त्तिजित् ४

अर्थ--दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, वंशलोचन, जीरा, कालाजीरा, धनिया, तालीशपत्र और अनारदाना, यह दशऔषधि दोदो तोले लेवै और विषांबिल, कैथ, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, चव्य, चीता, पीपलामूल, छुवारी, अजमोद, अमलवेत, अजवायन, खुरासानी अजवायन, और अजमोद, यह बारह औषधि एक एक तोला लेकर सबको चूर्ण बना लेवै और सब चूर्णकी बराबर मिश्री मिलादेवे, पश्चात् इस चूर्णको खानेसे बल, अग्नि, रुचि और कान्ति बढती है तथा प्लीहा, मूढवायु, श्वास, बवासीर, ज्वर, वमन, हृदय, कण्ठ, जिह्वारोग दूरहोते हैं ॥ ४ ॥

धान्यादि चूर्ण ।

धान्याजाजीयवानीरुचकजलचतुर्जातविश्वोषणाग्नि- ग्रन्थ्येकांशंत्रिभागंकरककणमदादीप्यवृक्षाम्लबिल्वम् । श्वेताषट्कंकपित्थाष्टकामिदमरुचिंगुल्मयक्ष्मप्रातिश्या- तीसाराऽर्शोग्निसादग्रहणिगलगदश्वासकासान्निहन्ति५॥

अर्थ–धनिया, कालाजीरा, अजवायन, कालानोन, सुगंधवाला, चतुर्जात (दालचीनी, तेजपात, इलायची, और नाग केशर), सोंठ, कालीमिरच, चीता और पीपलामूल, ये प्रत्येक

एकएक भाग, अनारदाना, पीपल, धायके फूल, अजमोद, विषांबिला और बेलगिरि; यह प्रत्येक तीनभाग, मिश्री छः भाग और कैथका गूदा आठभाग लेकर चूर्णकरे; यह चूर्ण-अरुचि, गुल्म, क्षय, प्रतिश्याय, अतिसार, बवासीर, मंदाग्नि, संग्रहणी, कंठरोग, श्वास और खाँसीको नष्टकरैहै ॥ ५ ॥

नारायणचूर्ण ।

स्वर्णक्षीरीकबेरिहपुषाव्योषवेल्लोत्तमाग्नि-
क्षारौजीरेमिशिसठिधनापौष्करंग्रन्थिपृथ्वी ।
रुग्दीप्योग्राखिलपटुसमंसप्तलैन्द्रौचतुर्द्धि-
र्द्धिस्त्रिर्दन्तीत्रिवृदितिमतश्चूर्णनारायणोऽयम् ॥ ६ ॥
पेयोर्शःपरिकीर्तिगुल्मजठरानाहानिलव्याधिविट्-
संगेदाडिमतिन्तिडीकबदरांभस्तक्रमद्यैःक्रमात् ।
ईरामस्तुभिरुष्णकैस्तुविषपाण्डुलपाग्न्यजीर्णज्वरे
कासश्वासभगंदरग्रहणिरुग्घृत्कुष्टकण्ठग्रहे ॥ ७ ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशीकटेरी), अजमोद, हाऊबेर, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, हरड, बहेडा, आमला, चीता, जवाखार, सज्जी, जीरा, कालाजीरा, सौंफ, कचूर, धनिया, पोहकरमूल, पीपलामूल, हिंगुपत्री, कूठ, अजवायन, वच और पाँचों नोन यह सब समानभाग और सातला चारभाग इन्द्रायण दोभाग, दन्ती दोभाग, और निसोथ तीनभाग ले सबका चूर्णकर अनारके रससे, इमलीके रससे, बेरीके क्वाथके साथ, तक्रकेसाथ, मदिराकेसाथ, मद्यकेमंडकेसाथ, और दहींके पानीकेसाथ खानेसे क्रमपूर्वक बवासीर, गुदशूल, गुल्म, उदररोग, अफारा, वातव्याधि और मलबंध यह सातरोग दूर होजातेहैं, गरमजलके खानेसे विषविकार, पांडुरोग, मन्दाग्नि-

अजीर्ण, ज्वर, खाँसी, श्वास, भगन्दर, संग्रहणी, हृदयरोग, कोढ और कण्ठरोग विनष्ट होतेहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

नारसिंहचूर्ण।

व्योषाष्टाग्नंदशाग्नेःकिटितपनसितार्द्धित्रिसप्ताहतास्ते
प्रस्थःप्रस्थोविदारीत्रिकटुतिलवरीभ्यस्तुलांघ्रिर्गुडूच्याः।
श्वेतार्धमध्वतोर्धघृतमितिमिलितोनारसिंहोऽतिबल्यो
वृष्यःस्यात्कुष्ठमेहोदरपलितवलीपीनसांध्यश्मकासः ८

अर्थ–सोंठ, मिरच और पीपल यह ३२ तोले, चीतेकीजड ४० चालीसतोले, वाराही कन्द, ८० अस्सीतोले, भिलावा, १२० एकसौवीसतोले, मिश्री, २८० दोसौ अस्सीतोले, विदारीकन्द ६४ चौंसठतोले, गोखरू ६४ चौंसठतोले, कालेतिल ६४ चौंसठतोले, शतावर ६४ चौंसठतोले, गिलोय १०० सौतोले लेवे, और सबको एकत्रकर पीसके चूर्णकरै, फिर इस चूर्णमें सहत १४० एकसौचालीसतोले और ७० सत्तरतोले घी मिलादेवै तौ नारसिंहचूर्ण बनजाताहै; यह नारसिंहचूर्ण–अत्यन्त बलकारक और वीर्यवर्द्धक है, तथा कोढ़, प्रमेह, उदररोग, विनाअवस्थाकेही बालोंका सफेद होजाना, शरीरमें बलोंका पड़ना, पीनस, मन्ददृष्टि और खाँसीको हरैहै ॥ ८ ॥

भार्ङ्ग्यादिचूर्ण।

भार्ङ्गीतुंबरुदारुदीप्यमिशियुग्दंतीद्विजीरात्रिवृ-
त्कोलैन्द्रीपृथुवेल्लसिंध्विभकणाहिंग्वादिलुंगार्द्दितम्।
मूत्रक्षारकुलत्थसारबदरांभस्तक्रपेयापसो
मस्तूणांबुसुराज्यपीतमधिकंयुक्त्यातथैषांघृतम्॥९॥

अर्थ–भारंगीकीजड़ तुंबुरू, देवदारु, अजमोद, सौंफ, सोया, दन्ती, जीरा, कालाजीरा, निसोथ, शीतलचीनी, इन्द्रायन,

बड़ीइलायची, वायविडंग, निर्गुण्डी, गजपीपल, और हिंग्वा-दिचूर्ण, इन सब औषधियोंको विजोरेके रसमें घोटकर गोमूत्र के साथ, अथवा जवाखारके पानीकेसाथ, वा कुलथीके क्काथके साथ, या अनारके रसके साथ, अथवा वेरीके क्काथके साथ, या छाछकेसाथ, वा पेयाके साथ, वा ऊँटनीके दूधके साथ, वा दहीके पानीके साथ, अथवा सुराके साथ, वा गरमजलके साथ तथा घीके साथ खानेसे यह चूर्ण नारसिंहचूर्णकी समान गुण-करैहैं, और इस चूर्णका घी बनाया जाय तौ वहभी येही गुण करैहै ॥ ९ ॥

भास्करचूर्ण ।

तालीशग्रन्थिधान्येभवरविडकणाकृष्णजीरच्छदाम्लं
सासुद्रंविश्वजीरोषणमथरुचकंत्वक्त्रुटीदाडिमंतैः ।
विंशत्यष्टत्रिपंचैकचतुरवयवैर्भास्करोन्नेऽथवाम्लै-
र्गुल्मामाशोंर्त्तिकासग्रहणिजठरहृत्त्वग्गदश्लेष्मवाते १०

अर्थ-तालीशपत्र, पीपलामूल, धनिया, नागकेशर, सैंधा-नोन, विडनोन, पीपल, कालाजीरा, तेजपात और अमलवैं-त, यह सब वीसवीस तोले, समुद्रनोन आठ तोले, सोंठ, जीरा और काली मिरच, एक एक तोला, कालानोन ५ पांच तोले. दालचीनी आधातोला, इलायची आधातोला, अनार चारतोले लेकर सबका चूर्णकर भातके साथ अथवा अम्ल-पदार्थोंके साथ खानेसे गुल्म, आमाजीर्ण. बवासीर. शूल. खाँसी, संग्रहणी, उदररोग, हृदयरोग, त्वचारोग, कफ और वात दूर होते हैं ॥ १० ॥

आभादिचूर्ण ।

आभारास्नाद्विवरिहपुषावृद्धदार्वश्वगंधा-

दीप्याच्छिन्नौषधिमिशियवान्योऽथचूर्णःसपेयः ।
मन्यास्नायूदरहनुकटीमज्जसंध्यास्थिवाते गृध्रस्यां
सक्थिचोष्णोदकरससुरामस्तुतक्राज्ययूषैः ॥११॥

अर्थ--बावची, रास्ना, दोनोंप्रकारकी शतावर,हाऊबेर, वृद्धदारू, (विधारा), असगंध, अजमोद, गिलोय, सोंठ, सौंफ, और अजवायन; यह सब औषधि समान भाग लेकर चूर्ण करे, यह चूर्ण गरम जल, मांसरस, मदिरा, दहीका पानी, छाछ, घी और यूष इनमेंसे एक किसी अनुपानके साथ सेवन करनेसे–मन्यागतवायु, शिरागतवायु, उदर, हनु, कटि, मज्जा, अस्थि और संधि इन चार स्थानोंकी वायु, गृध्रसीवायु और ऊरू देशकी वायु दूर होतीहै ॥ ११ ॥

हिंग्वादिचूर्ण ।

हिंग्वम्लत्रिपटूग्रषट्कटुसठीवृक्षाम्लिदीप्याल्लका-
पाठाजाज्यजगंधमूलहपुषाद्विक्षारसाराभया ।
हिक्काध्मानविबंधवर्ध्मकसनश्वासाग्निसादारुचिप्ली-
हार्शोऽखिलशूलगुल्मगलहृद्रोधाश्मपांडुप्रणुत् १२

अर्थ–भूनीहुईहींग, अमलवैंत, सैंधानोन, कालानोन, विड़नोन, वच, षट्कटु (सोंठ, पीपल, कालीमिरच, चव्य, चीता, और पीपलामूल), कचूर, विषांबिल, अजमोद, धनिया, पाढ़ा, जीरा, अज़वायन, सहँजनेकीजड, हाऊबेर, सज्जी, जवाखार, अनारदाना, और हरड़, इन औषधियोंका चूर्ण हिचकी, अफारा, मलबंध, वद, खाँसी, श्वास, मंदाग्नि, अरुचि, प्लीहा, बवासीर, सर्व प्रकारके शूल, गुल्म, कण्ठरोग, और पांडुरोगको नाश करे है ॥ १२ ॥

खांडवचूर्ण।

तुल्यंतालीसचव्योषणलवणगजंद्विःकणाग्रन्थ्यजाजी
वृक्षाम्लाग्नित्वचंत्रिर्घनबदरधनैलाजमोदाम्लविश्वम् ।
सार्धखंडोऽग्निसारोऽतिसृतिकृमिवमौखांडवोरुच्यजीर्णे
गुल्माध्मालपानलास्योदरगलगुदहृन्मृद्गदश्वासकाले॥

अर्थ–तालीशपत्र १ तोला, चव्य १ तोला, काली मिरच १ तोला, सैंधानोन १ तोला, नागकेशर १ तोला, पीपल १ तोला, पीपलामूल २ दोतोले, जीरा दोतोले, विषांविल दो तोले, चीतेकी छाल दो तोले, दालचीनी २ दोतोले, नागरमोथा ३ तीन तोले, बेर ३ तीन तोले, धनिया तीन ३ तोले, इलायची ३ तीनतोले, अजमोद ३ तीन तोले, अमलवैंत ३ तीन तोले, सोंठ ३ तीन तोले और मिश्री १९ उन्नीस तोले, तथा अनारदाना ९॥ साढ़ेनौ तोले; इनका बनाया चूर्ण–अतिसार, कृमि, वमन, अरुचि, गुल्म, अफरा, मन्दाग्नि, मुखरोग, उदररोग, गलरोग, बवासीर, हृदयरोग, मृत्तिकाजन्यरोग, श्वास और खाँसीको हरैहै ॥ १३ ॥

शार्दूलचूर्ण ।

हिंगूग्राविडशुण्ठचजाजिविषयावाटचाह्वकुष्ठंत्रिवृ-
दन्त्याशोत्तरमार्त्तिगुल्मजठरेशार्दूलमुष्णांबुना ।
दीप्यस्तुंबरुपौष्करंत्रिलवणंक्षाराभयाजंतुजि-
द्व्योषंहिंगुयुतास्त्रिवृत्त्रिरुदराऽर्शोरुग्रहेद्ध्र्यवात् १४

अर्थ–हींग एक तोला, वच २ तोले, विडनोंन ३ तीन तोले, सोंठ चार तोले, जीरा पाँचतोले, हरड छः तोले, अंडकी जड साततोले, कूठ आठ तोले, निसोथ नौ तोले, दन्ती दशतोले, इन सबको एकत्र पीसकर चूर्णकरे, यह शार्दूलचूर्ण गरम-

पानीके साथ सेवन करे तो शूल, गुल्म और उदररोगको दूर करे है, अजवायन, तुम्बुरु, पोहकरमूल, सैंधानोन, कालानोन, बिडनोन, जवाखार, हरड, वायविडंग, सोंठ, पीपल, कालीमिरच और हींग, यह सब औषधि समान भागलेवै, और सबसे तिगुना निसोथ मिला चूर्ण कर, जौंके क्काथके खानेसे उदररोग;बवासीर,शूल और अफारा दूर होताहै॥ १४॥

अग्निमुखचूर्ण।

क्षारौजीरेसुरनतचतुर्जातषट्कद्विभाह्वा
भार्ङ्गीदार्वींहरिद्रेंद्रयवहपुषासारधात्र्यःपटूनि ।
कुंभाब्दोग्रानलपृथिविकापौष्कराम्लोम्लिदीप्यौ
पूतीपथ्यागंधसठिवृकीवल्लरीहिंगुवेलम् ॥ १५ ॥
शिग्रोर्मुष्केक्षुरतिलवटोर्भस्मतप्तौसकृद्गो
र्वाःसीक्तोयोमलइतिसमैर्लुंगसुक्तार्द्रकांभः ।
त्रिस्त्रिःपीतोऽग्निमुखउदराजीर्णगुल्मग्रहण्या-
नाहोन्मादश्वसनकसनार्शःखुडेकुष्ठवृद्धयोः ॥१६॥

अर्थ–सज्जी, जवाखार, जीरा, कालाजीरा, देवदारु, तगर, चतुर्जात, षट्कटु, गजपीपल, भारंगी, दारुहल्दी, इन्द्रजौ, हाऊबेर, अनार, आमला, पाँचोंनोन, निसोथ, नागरमोथा, वच, भिलावा, हिंगुपत्री, पोहकरमूल, अमलवेंत, इमली, अजवायन, अजमोद, दो प्रकारकी करंज, हरड़, अमलतास, कचूर, पाढ, सफेद विधारा, हींग वायविडंग, सँहजिनेका खार, मोखेकाखार, तालमखाना, तिलकाखार, ढाककाखार, मंडूर(लोहेकामैल); यह सब औषधि समान भाग लेकर विजोरेके रसमें घोट कांजीकी तीन भावना देवै, फिर अदरखके रसकी तीन भावना, इस प्रकार चूर्ण बनावै; यह चूर्ण–

उदर, अजीर्ण, गुल्म, संग्रहणी, आनाह, उन्माद, श्वास, कास, अर्श, कोढ और वृद्धिको नष्ट करेहै ॥ १५ ॥ १६ ॥

सीतोपलादिचूर्ण।

साज्यक्षौद्रंत्वगेलांकणतुगसिकतांद्विःपरंगात्रतापे
श्वासाल्पाग्निज्वरास्त्रक्षयकसनकफेपार्श्वजिह्वास्वरार्तौ

अर्थ-दालचीनी एकभाग, इलायची दो भाग, पीपल ४ चार भाग, वंशलोचन आठ भाग, और मिश्री १६ सोलह भाग ले सबको पीसकर चूर्णकर घी और सहतके साथ खानेसे ज्वर, खाँसी, मंदाग्नि, दाह, रक्तक्षय, श्वास, कफ, पार्श्वपीडा जिह्वारोग और स्वरभेद नाशहोताहै ॥

पाठेन्द्रत्वक्फलाब्दौषधरसजविषाश्रीमदाकट्विपीतं
सक्षौद्रंतंदुलोदैर्ग्रहणिगुदरुजाशोंस्रवाहप्रवाहे॥१७॥

इतिबोपदेवकृतायांशतश्लोक्यांचूर्णाधिकारःप्रथमः ॥ १ ॥

अर्थ-पाढ, कूडेकीछाल, इंद्रजव, नागरमोथा, सोंठ, रसौत, अतीस, वेलकागूदा, धायके फूल, और कुटकी, यह सब औषधि समान भागलेकर चूर्णकर सहतमें मिला चावलोंके पानीके साथ सेवन करनेसे संग्रहणी, बवासीर, गुदाकीपीडा, रक्तातिसार और प्रवाहिका रोग दूर होजाताहै ॥ १७ ॥

इति बोपदेवशतके श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यविरचितायां चंद्रप्रभा नामभाषाटीकायां चूर्णाधिकारःसमाप्तः ॥ १ ॥

अथ गुटिकाधिकारः ।

कृष्णमोदक.

कृष्णाशुक्तिःकुडवमुपलामृद्धिखर्जूमधूका-
त्वक्पत्रैलार्द्धपिचुमधुनामोदकःस्वर्यवृष्यः ।
हिक्काकासज्वरमदवमीश्वासमूर्च्छाक्षतास्र-
ष्ठीवास्राढयानिलतृडरुचिप्लीहपार्श्वार्त्तिशोषे ॥१॥

अर्थ–पीपल दोतोले, बूराचारतोले, खजूर, चारतोले, दाख चार तोले, महुआ आधातोला, तज आधातोला, तेजपत्र आधातोला, और इलायची आधा तोला, लेकर सबका चूर्ण कर सहतमिला मोदक बनालेवे,इसको अग्निका बलाबल विचार कर खावै तो-स्वर उत्तम होजाय,वीर्यबढै, तथा हिचकी,खाँसी ज्वर, मद, वमन, श्वास, मूर्च्छा, उरःक्षत, थूकमें रुधिर आवै, रक्तपित्त, आढ्यवात, तृषा, अरुचि, प्लीहा, पसलियोंका शूल और शोष दूर होवै ॥ १ ॥

माणिभद्रमोदक ।

धात्रीवेल्लाभयास्त्रिस्त्रिवृदितिवटकोद्विर्गुडोमाणिभद्रः
श्वित्रार्शःकुष्ठगुल्मोदरकृमिकसनग्रंथ्यरुकश्वासमेहे ।

अर्थ–आमला एक भाग,वायविडंग एक भाग, हरड एकभाग, सफेद निसोथ तीन भाग लेवे, इन सब औषधियोंको छैभाग गुडमें पकाकर तीन तीन मासेके लड्डू बनावे,एक लड्डू नित्यखानेसे, कोढ़, गुल्म, उदररोग, कृमि, खांसी, ग्रन्थि, व्रण, श्वास और प्रमेह नष्ट होताहै ॥

हिंग्वादिगुटिका ।

हिंगुद्विक्षारदीप्याखिलकटुकषट्कैर्गुडोमातुलुंगा-
त्कोलात्साराद्रसैर्वाग्रहणिचलकफेदीपनपाचनोऽलम् २

अर्थ—हींग, जवाखार, सज्जीखार, अजमोद, पाँचोंनोन, और षट्कटु; यह सब समान भागलेकर बिजोरेके रसमें दो मासेकी गोली बनाकर खानेसे, संग्रहणी, तथा कफको दूर करे है, अग्निकोदीपन करे है और भोजनको पचावे है ॥ २ ॥

दार्व्यादिगुटिका।

दार्व्यब्दःषट्कटुसुरवरावेल्लताप्यंततोद्वि-
र्मण्डूराद्वादशगुणगवापःक्षिपेत्पक्वसांद्रे ।
पांडुःशोफोदरकृमिहलीमक्यरुच्याग्निसादो-
रुस्तंभाऽर्शोग्रहणिगलरुग्वासतक्रंपिबेत्तम् ॥ ३ ॥

अर्थ—दारुहलदी, नागरमोथा, षट्कटु, देवदारु, त्रिफला, (हरड, बहेडा, आमला,) वायविडंग, सोनामाखी, यह सब समान भागलेवे, और इनसे द्विगुणा मण्डूर लेकर, बारहवेंभाग गोमूत्रमें पकावे जब गाढ़ा होजाय तब ऊपर लिखीहुई औषधियोंका चूरनडालकर गोली बनावैं, यह गोली पाण्डु, सूजन, उदर, कृमि, कामला, अरुचि, मंदाग्नि, ऊरुस्तम्भ, बवासिर तथा संग्रहणीको हरे है, और गलरोगी इन गोलियों-को मट्ठेमें मिलाकर पिये ॥ ३ ॥

सूरणवटिका ।

त्वक्तीक्ष्णैलंसमृद्धिःकृमिहरणवराग्रंथितालीसभल्ली-
विश्वंताल्यग्नितद्विःसुरणमहिलताद्विर्गुडोऽर्शोऽतिहान्योः

अर्थ—दालचिनी एक भाग, काली मिरच एक भाग, इला-यची एक भाग, वायविडंग दोभाग, पीपल दोभाग, त्रिफला

दोभाग, पीपलामूल, दोभाग, तालीशपत्र दोभाग, भिलावा दोभाग, सोंठ दोभाग, मुसली चार भाग, चीता चार भाग, सूरण (जिमीकंद) आठ भाग, गंडुपदी, ८ आठ भाग, और गुड सोलहभाग लेवे, इसप्रकार इन औषधियोंको ले गुडमें गोली बनाकर खानेसे ववासीर दूर होजातीहै और जठराग्नि दीपन होजाती है ॥

कांकायनगुटिका।

तद्वत्कांकायनोऽप्येकपलचयकणाग्रंथिचव्याग्निविश्वे
द्व्येकप्रस्थाष्टपंचैकयवजमरिचाशौर्यरुःपथ्यजारम् ४॥

अर्थ--पीपल चार तोले, पीपलामूल आठ तोले, चव्य १२ बारह तोले,चीता सोलह तोले, सोंठ बीस तोले, जवाखार अठाईस तोले, काली मिरच चार तोले, जिमीकन्द चौंसठ तोले, भिलावा तीन तोले, हरड बीस तोले, और जीरा चार तोले लेकर इनका चूर्ण करे, चूर्णसे द्विगुना गुडमिला गोली बनावै; यह गोली सेवन करनेसे उपरोक्त गुणोंको करतीहै ४॥

त्रिजातादिमोदक।

पाद्द्व्येकत्रित्रिजातेभजलमथकणाग्रन्थितालीसचव्या
तीक्ष्णंविश्वाभयाविड्ग्रहणिरसपयोमंडिरारिष्टयूषैः॥
पांड्वर्शःकासगुल्मग्रहणिमदगदश्वासशोफप्रतिश्या
हृत्पार्श्वार्त्तिप्रसेकज्वरवमिसगुडोहन्तिपैत्तंसखंडः५

अर्थ–दालचीनी एकभाग, तेजपात एकभाग, इलायची एकभाग, नागकेसर एकभाग, सुगंधवाला एकभाग, पीपल आठभाग, पीपलामूल आठभाग, तालीसपत्र चारभाग, चव्य चारभाग, काली मिरच चारभाग लेवै; और जो मलरोध हो-य तौ सोंठ तथा हरड चारतोला मिलावै, इन सबसे द्विगुना

गुड मिलावै, फिर मोदक बनाकर मद्यरस, दूधकी मलाई, दहीकी मलाई, या चावलोंके चूनकी कढ़ीके साथ सेवन करै तौ–पांडु, बवासीर, खाँसी, गुल्म, संग्रहणी, मद, श्वास, सूजन, प्रतिश्याय (जुकाम) हृदय और फसलियोंका शूल, मुखसे लारका गिरना, ज्वर और वमन दूरहोवे, इन रोगोंमें पित्त प्रधान होयतौ अथवा पित्तकोप होय तौ गुडके स्थानमें मिश्री मिलावै ॥ ५ ॥

दीप्यादिक मोदक।

दीप्याग्रन्थिकणोषणामरमिशीसिंध्वग्निवेल्लंसमं
वेल्लर्याद्दशनागराच्चविजयांशाःपंचतुल्योगुडः।
विश्वार्चीगरगृध्रसीगुदकटीपृष्ठार्तिजंघाभिदाः
शोफामानिलपाण्डुतूनियुगलेश्लेष्मानिलेयूषणशः६

अर्थ–अजमोद, पीपलामूल, पीपल, कालीमिरच, देवदारु, सौंफ, सैंधानोन, चीता, वायविडंग, यह सब औषधि एक एक भाग, विधारा दशभाग, सोंठ दशभाग, हरड दशभाग, और सबकी बराबर गुड इनको मिलाकर गोली बनावै, यह गोली गरम जलके साथ खानेसे विश्वाची (एक प्रकारका वातरोग) विषदोष, गृध्रसीवायु, गुदा, कटी और पृष्ठकीवायु, जंघाओंकी पीडा, सूजन, आमवात, पांडुरोग, तूनी तथा प्रतूनी और कफनाश होवे ॥ ६ ॥

तालीसादिमोदक।

तालीसव्योषवृक्षाम्लजरखचविकाम्लोग्निवेल्लंत्रिजाता
ञ्यक्षंगौडस्तुलांघ्रिःस्वररुचिकृदसौपीनसश्वासकासे।

अर्थ–तालीशपत्र, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, बिषांविल, जीरा, चव्य, अमलवेत, और चीता, यह सब औषधि चार तो-

ले, और त्रिजात (दालचीनी, तेजपात, इलायची) तीन लेकर १०० सौ तोले गुडमें मिला मोदक बनाकै; अनुपान तथा मात्राके अनुसार सेवन करनेसे स्वर उत्तमहो, रुचि उत्पन्नहो, तथा पीनस, खाँसी, और श्वास दूर होताहै ॥

शम्बूकादिवटी।

शम्बूकायःसितायोमलरसजपलैस्त्रिद्विसप्तैककैकैः
सक्षौद्रैःपक्तिशूलश्वयथुजठररुक्पीनसाऽर्शोऽश्मपांडौ७

अर्थ–शंखकी भस्म १२बारह तोले, लोहेकी भस्म आठ तोले, बूरा अठाईश २८ तोले, मण्डूर ४ चार तोले, और रसोत चार तोले ले सहतमें गोली बनाकर खानेसे परिणामशूल, सूजन, उदररोग, पीनस, बवासीर, पथरी और पांडुरोग नष्ट होताहै ॥ ७ ॥

कैशोरकगुग्गुल।

द्रोणेपस्थौगुडूच्याविपचपुरवराभ्यांचवारार्द्धशेषं
पूतंभूयोघनेऽस्मिन्क्षिपमरिचकणावेल्लशुंठ्युत्तमाश्व।
शुक्त्यंशुकुंभदंत्योःपिचुयुगममृतामंचकैशोरकोऽयं
शोभारुग्गुल्मकुष्ठोदरखुडकसनालपाग्निपांडुप्रमेह ८॥

अर्थ–गिलोह ६४ चौंसठ तोले, गूगल ३२ बत्तीस तोले, और त्रिफला बत्तीस तोले लेवै, सबको १०२४ एकहजार चौबीस तोले जलमें पकावै, जब आधा पानी शेष रहजाय तब उतार लेवे. शीतल होनेपर कालीमिरच, पीपल, वायविडंग, सोंठ, और त्रिफला, यह प्रत्येक दो दो तोले लेकर चूर्ण बना मिलादेवै, तथा निसोथ, और दन्ती चौथाई तोला, और गिलोह चार तोले मिलाकर चार चार मासे गोली बनावै, इसको कैशोरक गूगल कहतेहैं, यह गूगल–सूजन, व्रण, गुल्म, कोढ़,

उदर, वातरक्त, खाँसी, मन्दाग्नि, प्रमेह और पाण्डुरोगको दूर करताहै ॥ ८ ॥

योगराजगुग्गुल।

वेल्लाह्वाहिंग्विभाह्वावृाकिजरणविषापंचकोलाजमोदा
मूर्वोग्राकौंतिभार्ङ्गीन्द्रजकटुकटुकाभ्योवराद्विःपुरास्त्रिः।
सक्षौद्रोयोगराजोग्रहणिचलजरावीजपाण्ड्वग्निहृत्त्व-
ग्गुग्गुग्मेहव्रणार्शोरुचिखुडकसनापस्मृतिश्वासशोषे ९

अर्थ—वायविडंग, धनिया, गजपीपल, हींग, पाढ़, जीरा, अतीस, पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, और सोंठ) अजमोद, मूर्वा, वच, रेणुका, भारंगी, इन्द्रजौ, सरसौं और कुटकी, यह सब समान भाग लेवै, सबसे द्विगुना त्रिफला और तिगुना गूगल लेवै,पश्चात् सबमें सहत मिलाय गोली बना-लेवै इन गोलियों सेवन करनेसे, संग्रहणी, वायु, जरा, वीर्य-दोष, पाण्डुरोग, मंदाग्नि, हृदयरोग, त्वचाके रोग, शूल, प्रमेह, व्रण, बवासीर, अरुचि, वातरक्त, खांसी, अपस्मार, श्वास और शोषरोग दूर होतेहैं ॥ ९ ॥

आभादिवटक।

तुल्याभादिशठीत्रिकण्टकरजोर्धाज्यःपुरोयःकफे
वातेमस्तुसुरारसोष्णकफयोर्यूषानुपानोजयेत्।
खाज्यंगृध्रासिभंगविद्धखुडहृत्त्वग्योनिरोगांश्चलं
मज्जास्नायुपदास्थिसंधिकटिदोःपृष्ठेहनौजानुनि १०

अर्थ—चूर्णाधिकारके दशमें श्लोकमें कहाहुवा सम्पूर्ण आभादि चूर्ण, कचूर और गोखुराको चूर्ण यह सब समानभाग, सबकी बराबर गूगल, और गूगलसे आधाभाग घी मिलाकर गोली बनावे; यह गोली दहीके पानी, मद्य, मांसरस, गरमपानी, दूध

और चावलोंकी कढी इनमेंसे किसी एक अनुपानके साथ सेवन करनेसे—कफ,वात, पंगुपन, गृध्रसीवायु, अस्थिभंग, शस्त्रादिसे विधाहुआ, वातरक्त, हृदयरोग, तथा पाँव, अस्थि, संधि, कटि, पीठ, गलपटे और घुटनोंकी वायु दूर होतीहै ॥ १० ॥

खादिरीगुटिका ।

शूर्पेऽपांखदिरात्तुलेरिमतुलांपक्त्वाघटेत्राक्षकं
पूतेक्काथघनेक्षिपागरुमदापत्तंगयष्टीजतुः ।
पुण्ड्रोशीरहिमांबुकट्फलजतुजातीत्तमापद्मकं
लज्जैलेयजटाब्दयासगिरिमृद्रोधोनिशेअंजने॥११॥
मंजिष्ठावकुलप्रियंगुखदिरन्यग्रोधरोहेरिमं
कर्पूरःकुडवंलवंगसुमनःपत्रीफलैलाद्धिमे ।
हन्याद्वक्रगपंचसप्ततिगदानेषागुटीखादिरी
तैलंचारिममेभिरेवविपचेत्क्काथ्यौषधव्यत्ययात् १२

अर्थ—दोहजार अडतालीश तोले जलमें, सफेद खैरकी छाल आठसौ तोले और काले खैरकी छाल चारसौ तोले डालके औटावै. जब ५१२ पाँच सौ बारह तोले जल शेष रहै तब उतारकर छान लेवै, फिर अग्निपै चढ़ादेवै, गाढ़ा होजानेपर उतार लेवे, पश्चात् इसमें अगर, धायकेफूल, पतंग,मुलैठी, पीपलकी लाख, कमल, खस, चन्दन, सुगंधवाला, कायफल, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, तेजपात, हरड, बहेडा, आमला, पद्माख, छुईमुईकीजड, एलुवा, बालछड, नागरमोथा, जवासा, गेरू, लोध, पठानीलोध, हलदी, दारुहलदी, सुरमा, रसौत, मजीठ, मौलसिरीके फूल, फूलप्रियंगू, खैर, वडके अंकुर, कालेखैरकी छाल, यह सब औषधि समानभाग ले, चूर्णकर

मिलादेवै और कपूर १६ सोलहतोले, लौंग चार तोले, जायफल चारतोले जावित्री चारतोले, शीतलचीनी चारतोले मिलाकर फिर गोली बनालेवै । यह खादिरीगोली-मुखके ७५ रोगोंका नाशकरैहै । ऊपर कही हुई औषधियोंका तेलबनाना होय तो सफेद खैरकी छाल चारसौ तोले, और काले खैरकी छाल आठसौतोले, डालकै क्वाथ बना पूर्वोक्त औषधि मिलावै, चूर्णसे छैगुना तेल डालकर पकावै, इसप्रकार सिद्ध कियेहुए तेलको "ईरिमतेल" कहते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

कोलादि गुटी ।

कालव्योषेंदुलाजात्रिसुरभिकतुगाम्लहृद्यंद्विखंडं
द्विद्व्यंघ्रिद्वादशैकाष्टचतुरातिवमीयक्ष्मकासज्वरास्रे ।

अर्थ-बेर तीनभाग, त्रिकुटा दोभाग, कपूर चौथाईभाग, खीलैं बारहभाग, त्रिसुगन्ध (दालचीनी, तेजपात और इलायची) एकभाग, वंशलोचन आठभाग, और इमलीकी छाल चारभाग लेवै और इनसबसे दूनी मिश्री मिलाकर, गोली बनालेवै, इन गोलियोंको सेवनकरनेसे वमन, क्षयरोग खाँसी, ज्वर और रुधिरविकार दूर होताहै ॥

दन्त्यादिवटक ।

कोठेऽर्शःपांडुकंडूग्रहणिदशदशाहांतराघ्नंतिपथ्याविंश
त्यादान्तिकुम्भाग्निगुडकणपलाक्षाग्रमान्यक्षापिंड्यः १३

अर्थ-दन्ती चारतोले, निशोथ एकतोला, चीता चार तोले, गुड बत्तीस तोले,पीपल एक तोला लेवै,और हरड बीस तोले, सबको मिला १० दश गोली बनावै, एक गोली नित्य खावै, इसप्रकार दशदिनतक खानेसे कोढ, बवासीर, पाण्डु, कंडू, और संग्रहणी रोग नष्ट होजाताहै ॥ १३ ॥

मधुवटक।

तुल्यापथ्याब्दवेल्लत्रिकयुगचविकाग्रंथिधात्र्योयकुंभ-
श्वेतादन्त्योष्टषट्त्रिः समवधुवटकः स्तंभनोष्णाम्बुपानः
पांड्वर्शःशोथगुल्मज्वरजठरजराल्पाग्निमेहक्षयाक्षि-
त्वग्रुग्दाहभ्रमाश्मव्रणकसनमहारुग्ग्रहण्यामवाते ॥१४॥

अर्थ–हरड, नागरमोथा, वायविडंग. दालचीनी, तेजपात, इलायची, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, चव्य, पीपलामूल, आमला, एकएकभाग, निसोथ आठभाग, मिश्री छै भाग और दन्ती तीन भागलेवै, फिर सबको मिलाकर गोली बनावै, इन गोलियोंके खानेसे जुलाब होताहै और विड्बंध विनष्ट होजाताहै, और इसके ऊपर गरम पानी पीवैतौ, पांडुरोग, बवासीर, सूजन, गुल्म, (वायगोला), ज्वर उदररोग, जरा, मन्दाग्नि, प्रमेह, क्षय, नेत्ररोग, त्वचारोग, दाह, भ्रम, पथरी, व्रण, खाँसी, महाशूल, संग्रहणी और आमवात रोग दूर होताहै ॥ १४ ॥

ओजस्करीगुटिका।

क्षीराज्येक्षुविदारितित्तिररसार्धाब्ध्येकपातांजलिं
प्रस्थेसिद्धयातिपिष्टमिक्षुसलिलैःखर्जूरविंशत्युतम्।
न्यस्येज्जीवनचारमाधवतुगायष्ट्याक्षमज्जोपला
कृष्णंपंचचतुश्चतुर्द्विचरणैकत्रिंशदकोभ्रिकम्॥ १५ ॥
तल्लेहेशिशिरेमधुद्विकुडवंमुष्टिंचजीरोषणा
पित्तासृक्क्षतयक्ष्मबीजचलरुग्घ्नीसास्वरोजस्करी।

अर्थ–दूध चारसेर,घी दोसेर, ईखका रस आठसेर, विदारीकन्दआधसेर, और तित्तिरिके मांसका रस दो सेर ले, सबको

एकत्र करकै पकावै, पश्चात् खजूर, जीवनीय गणकी औषधी वीसतोले, चिरोंजी सोलहतोले, महुवेके फूल सोलहतोले, वंशलोचन आठतोले, मुलैठी एकतोला, बहेडेकी मीग चारतोले, मिश्री एकसौ वीस तोले, और पीपल चारतोले मिलादेवै, शीतलहोनेपर ३२ बत्तीस तोले सहत, जीरा तथा कालीमिरच चार तोले मिलाकर गोली बनालेवै; यह गोली--रक्तपित्त, उरःक्षत, क्षयरोग, शुक्रदोष, ऋतुरोग और वातरोगको विनष्ट, करैहै, तथा स्वरको शुद्ध और शरीरमें ओज करैहै॥ १५ ॥

अंजनीगुटिका ।

लोध्राग्न्यापटुयष्टितुत्थरसजंव्योषंप्रपौण्ड्रंकृमि-
च्छित्ताम्रैंद्रजलंस्तनाजवटुकैश्चक्षुर्दगन्याजनम् ॥१६॥

अर्थ—लोध, त्रिफला, सैंधानोन, मुलैठी, तूतिया, रसौत, त्रिकुटा, सफेद कमल, वायविडंग, और तावा; इनसब औषधियोंको एकत्र पीस मेघके जलसे गोली बनालेवै, इनगोलियोंको स्त्रीके दूधमें, बकरीके दूधमें, अथवा श्योनाकके रसमें घिसकर लगानेसे सर्वप्रकारके नेत्ररोग नष्ट होजातेहैं ॥ १६ ॥

इतिश्र्यायुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृते शत-
श्लोक्यां चन्द्रप्रभानामभाषाटीकायां गुटिका-
धिकारः समाप्तः ॥ २ ॥

अथ अवलेहाधिकारः ।

कूष्माण्डावलेह ।

स्विन्नांभृष्ट्वाज्यमान्योःकुसुमफलतुलांतुल्यखंडांचपक्त्वा
व्याम्रैव्योंषत्रिजाताह्लकजरणगजैःक्षौद्रमान्यावलेहः ।
कासश्वासक्षतास्रक्षयवमथुतमस्तृड्ज्वरेस्वर्य-
वृष्योबल्योवर्ण्यश्चमूढानलचलगुदजेसूरणःपक्वएवम् १

अर्थ–पेठेको उसेकर छीललेवै, उसके भीतरका गूदा ४०० चारसौतोले लेकर चक्कूसे बारीक टुकडे करले, उनटुकडोंको सोहल तोले घीमें भूनकर ४०० चारसौतोले बूरेमें मिलाकर पकावै, पकनेपर त्रिकुटा, त्रिजात, धनिया, जीरा, नागकेशर यह सब आठ आठ तोले लेकर पाकमें मिलादेवै, शीतल होनेपर सोलहतोले सहत मिलाकर अवलेह बनावै; यह अवलेह–श्वास, उरःक्षत, रक्तपित्त, क्षयरोग, वमन, नेत्ररोग, तृषा और ज्वरको नष्ट करैहै । स्वरको उत्तमकरै, पुष्टिकरै, बल तथा तेजको बढावै, मन्दाग्नि, वातरोग और अर्शरोगके लिये पेठेकी जगह इसीप्रकार सूरणका पाककरै ॥ १ ॥

अगस्तिहरीतकीअवलेह ।

शंखाह्वादशमूलपुष्करसठीयासःस्वगुप्ताबला-
पामार्गेभकणामृतोषधवृकीग्रन्थ्याग्निभार्गीरसा ।
व्याम्रापथ्यशतंयवाढकमपांपंचाढकंचायव-
स्वेदात्पाच्यमिमाःशिवासचरसोगौडीतुलात्र्यंजलिः २
कृष्णातैलघृतात्पुनःकुडविकाक्षौद्रैरगस्त्याभया
कासाऽर्शोग्रहणीक्षयज्वरजराश्वासप्रतिश्यारुचौ॥

अर्थ-शंखाहुली, दशमूल, (सरिवन, पिठवन, कटहरी, कटाई, गोखरू, वेल, अरणी, श्योनाक, पाटल, कुम्भेर), पोहकरमूल, कचोर, जवासा, कौंछ, खिरैटी, चिरचिटा, गजपीपल, गिलोय, सोंठ, पाढ, पीपलामूल, चीता, भारंगी, रास्ना, यह हरेक औषधि आठ आठ तोले, हरड १०० एकसौ, और जौ२५६ दोसौछप्पन तोले लेकर१२८० एक हजार दोसौ अस्सीतोले पानीमें पकावै, जब जौ पकजावै तब निकाललेवै फिर हरडोंको पकाकर निकालले और उनके बीज निकाल डाले, फिर काढेको छानकर रखदेवै फिर हरडोंको पीस उस क्वाथमें मिलादेवै और ४०० चार सौ तोले गुड मिलाकर पकावै, जब पकते २ अवलेहकी समान होजाय तब उतार लेवै, शीतल होनेपर १६ सोलह तोले पीपल, सोलह तोले घी और सोलह तोले सहत मिलाकर बासनमें भरके रखदेवै, यह अवलेह-खाँसी, बवासीर, संग्रहणी, क्षय, ज्वर, जरा, श्वास, प्रतिश्याय और अरुचिको हरैहै ॥ २ ॥

आर्द्रकावलेह ।

दीप्यायोब्दधनात्रिजातजरणार्धाम्रैर्गुडार्द्रात्तुला-
पाकःपीनसशोफशूलकसनार्शोयक्ष्मगुल्मज्वरान् ॥३॥

अर्थ--अजमोद,लोहेकी भस्म, नागरमोथा,धनिया,त्रिजातक, जीरा यह प्रत्येक दोदो तोले, लेवे, गुड २०० दोसौ तोले, तथा अदरख २०० दोसो तोले लेवे, फिर सबको मिलाकर ऊपरकी समान अवलेह बनावे, यह अवलेह पीनस, सूजन, शूल, खांसी, बवासिर, क्षय, गुल्म और ज्वरको हरै है ॥ ३ ॥

भांर्गीशिवानामावलेह ।

द्विद्रोणेपांदशजटतुलांतुल्यभांर्गींपचेत्तत्
पादंभूयोभयगुडशतेन्यस्यभार्ङ्गीशिवाख्या ।

त्र्येकाष्टाम्रत्रिकटुकचतुर्जातमध्वन्वितालम्
हिक्काशोषश्वसनकसनैकाहिकोपीनसघ्नी ॥ ४ ॥

अर्थ--दशमूल ४०० चारसौ तोले, भारंगी ४०० तोले, लेकर २०४८ दोहजार अडतालीस तोले जलमें पकावे जब चौथाई शेष रहे तब उतारकर छानलेवे, फिर चारसौ तोले गुड़ और ४०० तोले, हरड डालके पकावे, जब गाढाहो जाय तब उतारले, शीतल होनेपर त्रिकुटा १२ बारह तोले चतुर्जातक चार तोले, और सहत बत्तीस तोले मिलादेवे तो उत्तम अवलेह बनवाय इसका सेवनकरनेसे हिचकी, शोष, श्वास, खांसी, एकाहिक ज्वर और पीनस रोग दूर होताहै॥४॥

कंसहरीतकीनामावलेह ।

कंसेपांदशमूलजेगुड़तुलापथ्याशतंपाचितम्
कर्षांशंत्रिकटुत्रिजातयवजंप्रस्थार्धमध्वान्वितम् ।
शोफामानिलगुल्ममेहकृशताश्वासाम्लकासारुचौ
वैवर्ण्यज्वरशुक्रमूत्रगुदरुक्प्लीहानिकंसाभया ॥ ५ ॥

अर्थ–दशमूल चौंसठ तोले, और हरड १०० तोले लेकर १०२४ एकहजार चोवीस तोले जलमें पकावे, जब २५६ तोले जल शेष रहजाय तब उतारकर हरड निकाल लेवे, और चारसौ तोले गुड डालकै पकावै, गाढ़े होनेपर उतारलेवै, फिर इसमें त्रिकुटा, त्रिजात और जवाखार, यह प्रत्येक कए एक तोले और सहत ३२ बत्तीस तोले मिलाकर अवलेह बनावे; रसका सेवन करनेसे सूजन, आमवात, गुल्म, प्रमेह, दुर्बलता, श्वास, अम्लपित्त, खांसी, अरुचि, विवर्णता, ज्वर, शुक्रदोष, मूत्ररोग, गुदारोग, और प्लीहा; यह सब रोग दूर होते हैं ॥ ५ ॥

वासाहरीतकीअवलेह ।

वासावारिद्वितुलसिकताद्धाभयापात्रपाको
मानीशुक्त्यंजलिपलयुतःक्षौद्रकृष्णातुगाभ्यः।
चातुर्जातादितिवृषाशिवाहन्तिसागुल्महृद्रु-
क्कासश्वासक्षयजठरतृड्विद्रधीन्पीनसास्रम् ॥ ६ ॥

अर्थ--अडूसेका रस ८०० आठसौ तोले, मिश्री ४०० चार सौ तोले, और हरडोंका चूर्ण २५६ दोसौ छप्पन तोले, मिलाकर पकावे, जब गाढ़ा होजाय तब उतारकर सहत ३२ तोले, पीपल दो २ तोले, वंशलोचन १२ बारह तोले और चतुर्जात चार तोले, मिलादेवे यह अवलेह गुल्म, हृदयरोग, खांसी, श्वास, क्षयरोग, उदररोग, तृष्णा, विद्रधि, पीनस और रक्तपित्तका नाश करैहै ॥ ६ ॥

चित्रकहरीतकीनामावलेह ।

पक्त्वापंचतुलांगुडामलशिखीछिन्नादशांघ्र्यंभसां
पथ्यापात्रवतींकृतांशिखिशिवाव्योषाच्चतुर्जातकात् ।
क्षौद्राच्चात्रिपलांजलिद्विकुडवैःक्षाराच्चशुक्त्यायुता
शोफार्शःक्षयकुष्ठपीनसकृमिश्वासांत्रगुल्माग्निकृत्॥७॥

अर्थ--गुड ४०० चारसौ तोले, आमलेका रस ४०० चारसौ तोले, चीतेका रस चारसौ तोले, गिलोह ४०० चारसौ तोले, दशमूलका क्वाथ ४०० चारसौतोले और हरडोंका चूर्ण २५६ दोसौ छप्पन तोले ले सबको मिलाकर पकावे, जब अवलेहकी समान होजाय तब उतारकर त्रिकुटा बारह तोले चतुर्जात १६ सोलह तोले, सहत १६ सोलह तोले, और जवाखार दो तोले, मिलादेवे इसका सेवन करनेसे सूजन, बवासीर,

क्षय, कोढ़, पीनस, कृमि, श्वास, अंत्रवृद्धि, और गुल्मरोग दूर होता है, तथा अग्निदीपन होतीहै ॥ ७ ॥

दन्तीशिवानामावलेह ।

द्रोणेपांपचपंचविंशतिशिवादन्त्याग्निनोर्द्धांतुलां
तत्प्रस्थंसशिवंतुलांग्रिकगुडंकुम्भांजलिंषट्पिचुः।
व्योषात्तैलपलेपुनार्द्धपलिकंक्षौद्रेतिदंतोशिवा
त्वक्पांडूदरशोफहृद्ग्रहणिरुग्गुल्मक्षयार्शोज्वरे॥८॥

अर्थ--हरड २५ पचीस, दन्ती २०० दोसो तोले, चीता २०० दोसो तोले लेकर १०२४ एकहजार चोविस तोले जलमें पकावै, जब चोंसठ तोले जल शेष रहे तब उतारकर इसमेंसे दन्ती और चीता निकालडाले, और हरडों ो निकालकर उनके बीज निकाल डाले हरडोंको काढेमें डालदेवे, फिर काढेमें १०० एकसौ तोले गुड डालकर पकावे, फिर इसमें निसोथ १६ सोलह तोले, त्रिकुटा ६ छै तोले, और तेल आठ तोले मिलाकर अवलेह बनावै, यह अवलेह त्वचाके रोग, पांडुरोग, उदररोग, सूजन, हृदयरोग, संग्रहणी, गुल्म, क्षय, बवासीर और ज्वरको दूरकरैहै ॥ ८ ॥

व्याघ्रीपथ्यावलेह ।

पथ्याव्याघ्र्योःपचशतयुगंवारिकुंभेपुनस्त
त्पात्रंपथ्यागुडशतमियंचार्धषट्षट्चतुर्भिः ।
क्षारक्षौद्रत्रिकटुकचतुर्जातबिल्वैः समेता
व्याघ्रीपथ्याजयतिकसनश्वासशोषप्रातिश्याः ॥९॥

अर्थ–हरड१००सौ और कटहरी४०० चारसो तोले लेकर १०२४ एकहजार चौवीस तोले जलमें पकावै, जब चौथा भाग जल शेषरहे तब उतार लेवे कटहरीको निकाल डालै

और हरडोंको निकालकर उनकी गुठली निकाल डाले, हरडोंको पीसकर छने हुए काढेमें डाल देवे, फिर इस काढेमें ४००चार सौ तोले गुड, दो तोले जवाखार, २४ चौवीस तोले सहत, २४ चौवीस तोले त्रिकुटा, और सोलह तोले चतुर्जातक डालकर अवलेह सिद्धकरे; यह अवलेह-खाँसी, श्वास, शोष और प्रतिश्याय रोगको हरैहै ॥ ९ ॥

कण्टकारीअवलेह।

क्वाथ्यव्याघ्रितुलावहःपुनरिदंपात्रंघृतंप्रास्थिकम्
व्यक्षाग्रंथ्यमृताग्नियासरसनाव्योषाब्दशृंगीद्विजा।
मत्स्यंड्याःपलविंशातेमधुतुगाकृष्णात्रिमान्यान्वितो
लेहोहृद्ग्रहगुल्महिध्मकसनश्वासार्शसांनाशनः ॥१०॥

अर्थ-चारसौ तोले कटहरीको १०२४ एक हजार चौवीस तोले पानीमें पकावै, जब चौथा भाग पानी शेष रहे तब उतारकर छान लेवे, इस छने हुए काढेमें ६४ चौसठ तोले बूरा और ६४ चौसठ तोले घी डालकर पकावै, फिर पीपलामूल, चीता, जवासा, रास्ना, त्रिकुटा, नागरमोथा, काकडाशिंगी, और भारंगी, यह दो दो तोले चूर्णकर पाकमें डाल देवे, जब सिद्धहोजावे तब उतार लेवे, शीतल होनेपर ३२ बत्तीस तोले सहत, ३२ बत्तीस तोले वंशलोचन, और पीपलका चूर्ण ३२ बत्तीस तोले मिलादेवे; इस अवलेहको सेवन करनेसे हृदयरोग, गुल्म, हिचकी, खाँसी, श्वास, और बवासीर दूर होतीहै ॥ १० ॥

कुटजाष्टकावलेह।

पक्त्वार्द्रात्कुटजात्तुलांजलघटेऽष्टांशेपुनःपालिकैः
पाठाशाल्मलिधातकीघनाविषालज्जामबिल्वैःसह।

लिह्यात्तत्कुटजाष्टकंजलगवाजाक्षीरमंडानुपोतीसा-
रंग्रहणीमसृग्दरमसृक्पित्तासृगर्शोंजयेत् ॥ ११ ॥

अर्थ–४००तोले गीली कुडेकी छालको १०२४ एक हजार चौवीस तोले जलमें पकावे, जब आठवाँ भाग जल शेष रहे तब उतार कर छान लेवे. पीछे आगपै चढ़ा देवे, गाढे होने-पर इसमें पाढ़ सेमलकी जड़, धायके फूल, नागरमोथा, अतीस, छुईमुईकी जड, और बेलगिरी; यह प्रत्येक औषधि चार चार तोले मिलादेवे; इस अवलेहको, पानी, गायके दूध, बकरीके दूध, और चावलोंके जलके साथ सेवन करे तो अतिसार, संग्रहणी, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, और रक्तार्श दूर होताहै ॥ ११ ॥

खदिराद्यवलेह ।

गायत्रीरिमरोध्रपुंड्रसुमनाजम्बूसमंगावृषा-
श्रेष्ठायष्टिपचंपचान्यथततोद्रोणेतुलार्द्धंपचेत् ।
तत्पादंपलिकैःपुनःसखादिरैर्भूनिंबदार्वीरिमै-
र्भूयःपादिकगैरिकंमधुसितायुक्ताःस्युरास्यामये १२

अर्थ–सफेदखैरकी छाल, कालेखैरकी छाल, लोध, कम-ल, चमेलीके पत्ते, जामुनकी छाल, मजीठ, अडूसा, त्रिफला मुलैठी, दारूहलदी यह सब औषधी २०० दोसौ तोले लेकर १०२४ एक हजार चौवीस तोले जलमें पकावै, जब चौथा-ई भाग जल शेष रहे तब उतारकर छान लेवै, फिर इसमें सफेद खैर, चिरायता, दारूहलदी, कालीखैर, यह प्रत्येक चार चार तोले मिला देवे, चौथाभाग शेषरहनेपर उतार लेवै, शीतल होनेपर सहत और मिश्री मिलाकर सेवन करे तो सर्वप्रकारके मुखरोग दूर होतेहैं ॥ १२ ॥

कल्याणकावलेह ।

त्रिप्रस्थामलकीरसाद्गुडतुलार्द्धंचात्रिवृत्तैलयो-
र्मान्यौपंचपटुद्विदीप्यहपुषाजाजीवराषट्कट ।
पाठाह्लाकणवेल्लमाक्षिकमयंलेहाविजातीव्रण-
स्त्वग्बीजोदरमेहरुग्ग्रहणिपांड्वर्शःसुकल्याणकः १३

अर्थ-आमलेका रस १९२ एकसौ बानवै तोले, गुड २०० दोसौ तोले, निसोथ ३२ बत्तीस तोले, तिलका तेल ३२ बत्तीसतोले, पाँचोंनोन १ एक तोला, अजवायन एक तोला अजमोद एक तोला, हाऊबेर एक तोला, जीरा १ एक तोला, त्रिफला एक तोला, षट्कटु एक तोला, पाढ़ एक तोला, धनिया एक तोला, पीपल एक तोला, वायविडंग, एक तोला, इसप्रकार सब औषधि लेकर अवलेह बनावै, फिर इस अवलेहको त्रिजातके चूर्णके साथ सेवन करे तो-व्रण, कोढ, वीर्यदोष, आर्त्तवरोग, उदररोग, प्रमेह, संग्रहणी, पांडु, और बवासीर दूर होतीहै ॥ १३ ॥

च्यवनप्राशावलेह ।

द्राक्षैलाब्ददशांघ्रिजीवनबलाशृंग्यब्जटायःकणा-
पथ्याकाकनसाब्जपुष्करसठीछिन्नाविदारीवृषम् ।
वर्षाभूहिममाभ्रिकंजलघटेधात्रीशतैःपंचभिः
प्रस्थेव्यास्थिशिवायुतंयमकतोद्वीषट्पलेभर्जितम् १४
सश्वेतार्द्धतुलंपचेन्मधुतुगाकृष्णाचतुर्जातषड्-
द्विद्विद्व्येकपलान्वितश्च्यवनकप्राशोजरामृत्युजित्।
कासश्वासखुड्ज्वरक्षयवमीहृन्मूत्रशुक्रार्तिजित्

अर्थ- दाख, इलायची, नागरमोथा, दशमूल, जीवनीयगण,

खिरैटी, काकडाशिंगी, भुईआमला, लोहा, पीपल, हरड, कायफल, कमल, पोहकरमूल, कचूर, विदारीकन्द, गिलोय, अडूसा, पुनर्नवा और चन्दन, यह प्रत्येक चार चार तोले लेकर १०२४ एक हजार चौवीस तोले पानीमें डालकर पकावै फिर इसमें ५०० पांच सौ आमले छोडदेवै जब पकते पकते ६४ चौंसठ तोले पानी बाकी रहै तब उतारकर छानलेवै, और आमलोंकी गुठली निकाल डालै फिर आमलोंको सिलपै पीसकर २४ चौवीस तोले घी और२४चौवीस तोले तेलमें भून लेवै फिर इन भुनेहुए आमलोंको पूर्वोक्त काढेमें डालकै और २०० दोसौ तोले बूरेमें पकावै। जब गाढा अवलेह होजाय तब उतारकर उसमें २४ चौवीस तोले सहत, वंशलोचन आठ तोले, पीपल आठ तोले, और चतुर्जातक एक पल मिलाकर सिद्ध करे यह च्यवनप्राशनामवाला अवलेह जरा, मृत्यु, खांसी, श्वास, वातरक्त, ज्वर, राजयक्ष्मा, वमन, हृदयरोग, मूत्र और वीर्यके विकारोंको नष्टकरैहै ॥ १४ ॥

अक्षावलेह।

सक्षौद्रोऽक्षशताजमूत्रशतजःकासोत्कफश्वासहा १५॥

अर्थ–१०० एक सौ बहेडोंको लेकर ४०० चार सौ तोले, बकरीके मूत्रमें औटावै, जब चौथाई शेष रहै तब उतारकर सहत मिलाकर सेवन करै तो खांसी और कफयुक्त श्वास दूर होताहै ॥ १५ ॥

पंचजीरकावलेह।

जीराह्लामिशिमेथिदीप्यहपुषाषट्कङ्कविश्वंपृथु
र्वन्दाशोनकदीप्यवेल्लबदरंश्यामाभयानागजम्।
बैल्वक्षीरगुडाज्यभाजनतुलार्धप्रस्थपक्वंचतुः

कंपिल्लौषधकृष्णजीरमबलार्त्तिपंचजीरोजयेत्॥१६॥

इतिबोपदेवपंडितविरचितायां शतश्लोक्यामवले-
हाधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अर्थ-जीरा, धनियां, सौंफ, मेथी, अजमोद, हाऊबेर, षट्-कट्ठ, सोंठ, हिंगुपत्री, वन्दा, अलसी, अजवायन, वायविडंग, बेर, फूलप्रियंगू, हरड और सीसेकीभस्म, यह सब औषधी चार चार तोले, दूध२५६दो सौ छप्पन तोले,गुड २०० दो सौ तोले, और घी ६४ चौंसठ तोले लेवै सबको मिलाकर पकावै जब अवलेहकी समान होजाय तब चारतोले कवीला और कालाजीरा मिलादेवै, इसको सेवन करनेसे सर्वप्रकारके स्त्री-रोग विनष्ट होतेहैं ॥ १६ ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यविरचितायां चन्द्रप्रभानाम्न्यां
बोपदेवशतश्लोकीभाषाटीकायामवलेहाधिकारःसमाप्तः ॥ ३ ॥

अथ घृताधिकारः।

षट्पलघृत।

शुक्तयंशैर्विडपंचकोलहपुषाजीराजमोदोद्भिदा-
जाजीहिंगुकरंजसिंधुरुचकैःशारैःपचेत्सर्पिषः।
प्रस्थंपात्रिकविश्वसारबदरांभोमस्तशुक्तैर्ज्वरे-
ल्पाग्नौपीनसमेहगुल्मकृमिरुक्पांडुक्षयेषट्पलम् ॥१॥

अर्थ-बिडनोन दो तोले, पंचकोल दो तोले, हाऊबेर दो तोले, जीरा दो तोले, कालाजीरा दो तोले, हींग दो तोले जवाखार २दो तोले, घी ६४ चौंसठ तोले, अनारका रस चौंस-ठ तोले, बेरीका काढ़ा ६४ चौंसठ तोले और दहीका पानी ६४ तोले लेवे, विधिपूर्वक सबको मिलाकर पकावै, जब एक

सेर बाकीरहै तब उतारलेवै यह घी ज्वर, मन्दाग्नि, पीनस, गुल्म, प्रमेह, कृमि, पाण्डु और राजयक्ष्माको दूरकरैहै ॥ १ ॥

वज्रघृत ।

द्विव्योष्यग्नित्रिकटुकटुकाकुंभदन्तीविषोग्रा-
श्रेष्ठापाठाग्र्वधकरतलैःस्नुक्पयोमुष्टिपिष्टैः ।
सर्पिःप्रस्थंपचयजयतिश्वित्रहिध्माश्मगुल्म-
प्लीहाकुष्ठंकठिनजठरेस्नेहरेकीचवज्रम् ॥ २ ॥

अर्थ–कटहरी,चीता, त्रिकुटा, कुटकी, निसोथ, दन्ती, अतीस, बच, त्रिफला, पाढ़, अमलतास, यह प्रत्येक औषधि दो दो तोले लेकर चार तोले थूहरके दूधमें भिजोवै, पश्चात् ६४ चौंसठ तोले घीमें डालकै पकावै, यह घी श्वित्रकोढ़ (सफेद कोढ़), हिचकी, पथरी, गुल्म, प्लीहा, कोढ़, और गुल्मको हरे है, और स्नेहन तथा रेचन है ॥ २ ॥

रास्नादिघृत ।

रास्नासारषडूषणत्रिलवणक्षाराद्विधात्रीवृकी-
भार्ङ्गीयासबलाम्लवेल्लबृहतीद्राक्षाभयापौष्करैः ।
दीप्योग्राब्दसुरार्द्धिशृंगिसाटिकावृश्चीवयुग्गोक्षुरै-
र्हिध्माश्वासहतस्वराग्निकसनेव्याध्यंभसाज्यंशृतम् ३॥

अर्थ–रास्ना, अनारदाना, षडूषण, त्रिलवण (सैंधा, काल और विड़नोंन), जवाखार, आमला, भुईआमला, पाढ़ भारंगी, जवासा, खिरैटी, अमलवेंत, वायविडंग, बृहती (कटाई), दाख, हरड, पौहकरमूल, अजवायन, वच, नागरमोथा, देवदारु, ऋद्धि, काकडाशिंगी, कचूर, सफेदपुनर्नवा, लालपुनर्नवा और गोखरू इन सब औषधियोंको समान

भाग लेकर कटेरीके काढेमें घीको सिद्धकरे, यह घी.-हिचकी श्वाँस, मन्दाग्नि, और खाँसीको दूर करैहै ॥ ३ ॥

कल्याणघृत ।

गोप्यौपर्ण्यौनिशोरुङ्नतहिमबृहतीसारतालीसदन्ती-
श्रेष्ठेन्द्रीपद्मकैलोत्पलसुरविकसैलेयवेल्लेभकौन्त्यः ।
स्त्रीदीप्योग्राब्दजातीमुकुलमितिशृतंतेनकल्याणकाज्यं
कण्डूमूर्च्छास्रपाण्डुज्वरगरकसनोन्मादशोफेषुपुत्र्यं ४

अर्थ-कालीसर, गौरीसर, सरिवन, पिठवन, हलदी, दारुहलदी, कूठ, तगर, चन्दन, बडीकटहरी, अनार, तालीसपत्र, दन्ती, त्रिफला, इन्द्रायन, पद्माख, इलायची, कमल, देवदारु, मजीठ, भूरिछरीला, वायविडंग, नागकेसर, रेणुका, फूलप्रियंगू, अजवायन, बच, नागरमोथा, और चमेलीके फूल यह सब औषधि समानले इनका घी पकावै, यह घी-खुजली, मूर्च्छा, रक्तपाण्डु, ज्वर, विष, खाँसी, उन्माद, और खूजनको दूर करैहै, तथा पुत्रको देवैहै ॥ ४ ॥

फलघृत ।

मांजिष्ठाकुष्ठकौन्तीमधुकनतासिताग्राजमोदाश्वगंधा
मेदपद्माह्वदन्तीवृषभवरिवराजीवकादारुवीरे ।
व्याघ्र्यौद्राक्षाब्दहिंगूत्पलहिमकटुकालक्ष्मणैलानिशौतैः
सिद्धंक्षीरेफलाज्यंशिशुयुवयुवतीभूतशुक्रार्त्तवार्त्तौ ५॥

अर्थ-मजीठ, कूठ, कवीला, मुलैठी, तगर, मिश्री, वच, अजमोद, असगंध, मेदा, महामेदा, पद्माख, दन्ती, अडूसा, सतावरी, त्रिफला, जीवक, देवदारु, काकोली, क्षीरकाकोली कटेहरी, बडीकटेहरी, दाख, नागरमोथा, हींग, कमल, चन्दन, कुटकी, सफेदकटेहरी, इलायची, हलदी और दारुहलदी यह सब औषधि समान भाग लेवै, और सब औषधियोंसे चौगु-

ना घी तथा घीसे चौगुना दूध लेकर विधिपूर्वक घीको सिद्ध करे; इस घीको सेवन करनेसे बालरोग दूर होवै, मनुष्यका वीर्य शुद्ध होवै, और स्त्रियोंका आर्त्तव शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥

पंचगव्यघृत ।

सप्ताह्वादशमूलपुष्करवराभाङ्गीन्द्रनीलीनिशे
मूर्वाघाटयवासफाल्गिवभकणास्तिक्ताग्वधास्तज्जले।
मूर्वाकुम्भकिरातपुष्करवृकीभूतीकदन्त्यौनिशे
गोप्यौरोहिषयासवेल्लमदयंत्युग्रागजाह्वाद्विजा ॥६॥
तिक्ताव्योषमृदग्निनीलिनिचुलास्तैःपंचगव्यंपचे-
त्पांडर्शोज्वरशोथगुल्मजठरापस्मारकासक्षये ।

अर्थ-सतवन, दशमूल, पौहकरमूल, त्रिफला, भारंगी, इन्द्रजौ, नील, हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, चिरचिटा, जवासा, कठूमर, गजपीपल, कुटकी, और अमलतासका गूदा इन सब औषधियोंका काढा करे-उस काढेमें मूर्वा, निसोत, पोहकरमूल, पाढ, चिरायता, सुगंधतृण, दोनों प्रकारकी दन्ती, हलदी, दारुहलदी, रोहिष, सोधिया, जवासा, वायविडंग, चमेलीके फूल, वच, गजपीपल, भारंगी, कुटकी, त्रिकुटा खडिया, चीता, नील, और जलवैंत यह सब औषधि, पंचगव्य, और घी डालकर पकावै, जब घृत सिद्धहोजाय तब उतार लेवै, इस घृतको सेवन करनेसे-पांडु, बवासीर, ज्वर, सूजन, गुल्म, उदर, अपस्मार, कास, और राजयक्ष्मा रोगको हरै है ॥ ६ ॥

बिन्दुघृत ।

धात्रीतोयसुधापयोंजलिपलेसिंध्वर्धशाणंत्रिवृ-
त्कंपिल्लेद्विपदेजलेजठरिणेविद्वान्यमानींपचेत् ॥७॥

अर्थ-आमलेका रस १६सोलह तोले, गिलोयका रस ४ चार तोले, सैंधानोन दो मासे, निसोत दो तोले, कबीला दो तोले, और घी ३२ बत्तीस तोले लेवै. इन सबको यथाविधिसे पकाकर घृत सिद्धकरै, यह घी सब रोगोंको हरै है ॥ ७ ॥

जात्यादिघृत ।

जातीनिंबपटोलपत्रकटुकातुत्थद्विपीतारुणा-
गोपीसिक्थकरंजबीजमधुकोशीराज्यमुग्रेव्रणे ।

अर्थ-चमेलीके पत्ते, नीमके पत्ते, पटोलपत्र, कुटकी,तूतिया, हलदी, दारुहलदी, मजीठ, करियावासाउ, मोम , करंजके बीज, मुलैठी और खस, यह सब औषधि घीमें पकाकर घीको सिद्धकरै, यह घी-उग्रव्रणको दूर करैहै ॥

चांगेरीघृत ।

कृच्छ्राशोंग्रहणीकफानिलगुदार्तविष्टभागोघृतं
चांगेरीरसदाध्निपंचकटुदीप्यैलावृकीश्रीसुरैः ॥ ८ ॥

अर्थ-पंचकटु, अजवायन, धनिया, पाढ, बेल और देवदारु-यह औषधि, नोनियारस, घी, इनको दहीमें पकाकर घृतसिद्धकरै; यह घी- मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, संग्रहणी, कफ, वात, और गुदभ्रंशको दूरकरैहै ॥ ८ ॥

धन्वन्तरिघृत ।

वृश्चीवौबोढदन्तीसुरवरुणकपित्थाभयाकोग्न्यरुस्नुङ्-
मूलेपूतीदशांध्यौषधसठिचदशाम्रंपृथक्तत्कुथोत्थात् ।
प्रस्थःकोलाद्यवाच्चाष्टगुणजलशृतेत्रांध्रिगेरोहिषोग्रा-
भार्ङ्गीचव्यद्विकृष्णौषधनिचुलवरावेल्लकंपिल्लकुष्ठैः॥९॥
प्रस्थोधान्वंतराज्यात्क्षयखुडवमथून्मादगुल्मांत्रपांडौ
मेहार्शःकुष्ठशोफोदरगरपिटकाविद्रधिश्वासकासे ।

अर्थ-सफेद चिरचिटा, लालचिरचिटा, कदूका खार, दन्तीकी जड, देवदारु, बरनेकी छाल,कूठ,हरड, आक, चीतेकी जड, थूहर, पीपलामूल, दशमूल, पोहकरमूल, दोप्रकारकी करंज, सोंठ, कचूर, यह सर्व औषधि चालीस तोले, सफेददाभ चौसठ तोले और जौ चौसठतोले लेवै, सब औषधियोंसे आठगुना जल ले उसमें सबको औटावे,जब चौथा भाग बाकी रहे तब रोहिष,सोंधिया, बच, भारंगी, चव्य, पीपल, गजपीपल, सोंठ, निमकी जड़, त्रिफला, वायविडंग, कवीला और कूठ, यह औषधी समानभाग, घी ६४ चौसठ तोले, लेकर सबको पूर्वोक्त काढेमें पकावै यह घी क्षय, वातरक्त, वमन, उन्माद, गुल्म, अंत्रवृद्धि, पाण्डु, प्रमेह, बवासीर, कोढ़, सूजन, उदररोग, विषदोष, पिटिका, श्वास, और खांसीको दूर करे है ॥ ८ ॥

आटरूषघृत।

सक्षौद्रंवासकांभःकुसुमशृतघृतंभ्रान्तिवीसर्पशोषे
पित्तास्रश्वासगुल्मज्वरकसनतमःकामलाहृत्स्वरार्त्तौ

अर्थ-अडूसेके पत्तोंके रसमें अडूसेके फूलोंका रस, और घी डालके पकावै, जब पकजाय तब उतारकर सहत मिलाके सेवन करे तो भ्रान्ति, विसर्प, शोष, रक्तपित्त, श्वास, गुल्म, ज्वर, खांसी, तिमिर, कामला, हृदयरोग, और स्वरभेद दूर हो ॥ १० ॥

सुकुमारकघृत।

पक्त्वातोयवहेपुनर्नवतुलांकाशाद्विदर्भौत्रला-
श्वाहाभीरुदशांघ्रिरुव्बिषुपयस्येक्षुंदशाम्रास्ततः।
प्रस्थंद्वाद्विसकृत्पयोघृतरुवुस्नेहात्पचेद्द्याढके
द्र्याम्रैः पिप्पलिदीप्यसिंधुमधुकद्राक्षौषधग्रंथिभिः ११

गुल्मार्शःखुडवर्ध्मविद्रधिमरुद्बीजार्त्तिशोषोदर-
प्लीहघ्नंतुकुमारकंसुविहितंवृष्यंसरंबृंहणम् ॥

अर्थ–पुनर्नवा ४०० चारसौतोले, काँस, दोजातिकी दाभ, देवनल, असगंध, शतावरी, दशमूल, अंडकी जड, विदारीकंद और ईखकीजड; यह प्रत्येक चालीस चालीस तोले लेकर ४०९६ चारहजार छानवै तोले पानीमें पकावै, जब आठमां भाग अर्थात् ५१२ पाँचसौ बारह तोले बाकीरहै तब इसमें १२८ एक सौअढाईस तोले दूध, १२८ एकसौ अठाईस तोले घी, और चौसठतोले अंडीका तेल डालकर पकावै, फिर पीपल, अजवायन, सैंधानोन, मुलैठी, दाख, सोठँ, और पीपलामूल, यह औषधि मिलादेवै; यह घी- गुल्म, बवासीर, वातरक्त, विद्रधि, वातरोग, शुक्रदोष, आर्त्तवरोग, शोष, उदर, प्लीहारोग; इनको दूरकरताहै, व्रणको नष्टकरताहै, वीर्यको बढाताहै, सारक और पुष्टिकारक है ॥ ११ ॥

बृहत्पंचमूलादिघृत ।

प्रस्थार्धंगुरुपंचमूलसरलासिंहीरुवोस्तत्समं
लोध्रंद्विस्त्रिफलांपचेज्जलघटेतत्पात्रपथ्याढके १२॥
साशारात्रिपलेद्धिमानिहविषस्तत्सर्ववातामये
योनिव्यापदिवर्ध्मगुल्मजठरेवातज्वरेत्वात्रिवृत् ।

अर्थ–बृहत्पंचमूल, निसोत, कटेहरी, और अंडकी जड यह प्रत्येक औषधी चार चार तोले, लोध ३२ बत्तीस तोले और त्रिफला चौसट तोले, इन सब औषधियोंको १०२४ एक हजार चोविस तोले पानीमें पकावै, जब चौथाई जलबाकी रहे तब उतारले, फिर इसमें २५६ दोसौ छप्पन तोले, दही, बारह तोले जवाखार, और ६४

चौसठ तोले घी डालके पकावै, जब यह घृत सिद्ध होजाय. तब इस घृतको सेवन करनेसे सर्व प्रकारके वातरोग, योनिरोग, बद, गुल्म, और उदररोग, दूर होतेहैं. इसघीमें निसोत मिलाकर सेवन करै तौ वातज्वर दूर होवे ॥ १२ ॥

अष्टांगघृत।

शंखाब्राह्म्यमृतार्कवह्लिमलयूग्राब्रह्मसोमावरी-
त्यष्टांगंपयसाघृतंचलकफघ्नायुष्यसारस्वतम् १३॥

अर्थ–शंखाहुली, ब्रह्मी, गिलोह, सूरजमुखी, कटूमर, बच, सफेतबिडारा और सतावरी, इन आठ औषधियोंका घी दूधमें पकाकर खानेसे वातरोग, और कफरोग दूर होवै, आयुष्य अधिक होवै, और बुद्धि बढे है ॥ १३ ॥

तिक्तघृत।

सप्ताह्वोग्राग्र्वधवृकिवरापर्पटीशीरमूर्वा
पीतेगोप्यौहिमवृषवरीनिंबभूनिंबतिक्ताः।
कृष्णेछिन्नाब्दकुलकविषेयासपद्माह्वयष्टी
त्रायंत्यैंद्रींद्रिजइातिपचाष्टाढ्रिरंभःशिवांभः ॥ १४ ॥
सर्पिस्तिक्तंप्रदरपिटकाकुष्ठवीसर्पदाहे
कण्डूपांडुभ्रममदतमोव्यंगविस्फोटगण्डे
शोफोन्मादग्रहणिजठरेविद्रधौतृड्ज्वरार्त्तौ
हृद्रुग्गुल्मापचिचलगलार्त्तौव्रणास्रेषुपित्ते ॥ १५ ॥

अर्थ–सतोना. वच, अमलतास, पाढ़, त्रिफला, पित्तपापडा, खस, मूर्वा, हल्दी, दारुहलदी, दोनों प्रकारकी शारिवा, चन्दन, अडूसा, सतावरि, चिरायता, कुटकी पीपल, गजपीपल, गिलोह, नागरमोथा, कडवीतोरई, दो प्रकारका अतीस, ज-

वासा, पद्माख, मुलैठी, त्रायमान, इन्द्रायन, और इन्द्रजव, इन औषधियोंका कल्ककर उसमें आठगुना पानी और दुगुना आमलेका रस मिलाकर पकायाहुआ घी प्रदर, प्रमेह, पिटिका, कोढ़ विसर्प, दाह, खुजली, पाण्डु, भ्रम, मद, तम, व्यंग (झांई), विस्फोटक, गंडमाला, सूजन, उन्माद, संग्रहणी, उदररोग, विद्रधि, तृषा, तथा ज्वर, हृदयरोग, अपचि, वातरोग, गलरोग, व्रण और रक्तपित्तको दूर करैहै ॥ १५ ॥ १६ ॥

नारसिंहघृत ।

वेल्लाक्षासनशिंशिपाग्निखदिरारुष्काभयायोदलं
पिष्ट्वाष्टादशवार्यहंपचरवौलौहेथसायानले ।
पादस्थेत्रिवरीरसेसमपयोभृंगापआज्यंचतुस्तैलं
चास्यातिनारसिंहमाखिलान्रोगाञ्जरामंतकम्॥१६॥

इति श्रीबोपदेवपंडितविरचितायांशतश्लोक्यां
घृताधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अर्थ—वायविडंग, बहेडा, असन, सीसम, चीता, खैर, भिलावा, हरड और लोहेके पत्र, इन सब औषधियोंका चूर्ण कर अठारह गुने पानीमें डाल लोहेकी कढाईमें कर चूल्हेपै चढा तीनदिनपर्यन्त मृदु अग्निसे पकावै, जब चौथा भाग जल बाकी रहे तब काढेसे तिगुना सतावरीका रस छोडदेवै, सतावरीके रसकी समान दूध डालदेवै और दूधकी बराबर भाँगरेका रस, मिलादेवै, तथा काढेसे चौगुना घी वा तेल डाल देवे यह घी-या तेल-सर्व रोगोंको हरे तथा जरा और मृत्युको दूर करे है ॥ १६ ॥

इति श्रीमदायुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यविरचितायां बोपदेवकृत शतश्लोक्याश्चन्द्रप्रभानामभाषाटीकायांघृताधिकारःसमाप्तः ॥ ४ ॥

अथ तैलाधिकारः।

प्रसारिणीतैल।

सारिण्यश्वादशांघ्रित्रिकटवरिबलाशैर्यवृश्चीवरास्ना
छिन्नागुप्तास्तुलांशायवबदरकुलत्थाढकाःषट्त्रिकुंभे।
पक्त्वापांतैलपात्रंसमपयसिघटेत्राढके मूलकांभः
शुक्तंमस्त्वारनालंदधिरसइतितैःशौक्तिकैरुङ्नताब्दैः१
स्पृग्रक्तोग्राष्टवर्गोनलसरलसठीबोलगालत्रिजातै-
र्येष्टीशृंगाटसिंहेभकणनखनिशादंतदारुद्विदीप्यैः।
मांसीषट्कटुजाजीबिसनलकृमिजिच्चोरशृंगीकसेरु-
क्षारोयोमूलरास्नास्रपटुमिशिहिमैःसारिणीतैलमेतत्२॥
जृंभोद्गारजराखुडक्षयरुजापस्मारभग्नक्षता-
ध्मानोन्मादमनोनिलश्रुतिशिरस्त्वग्बीजवाग्व्याधिषु।

अर्थ–प्रसारिणी, असगंध, दशमूल, गोखरू, सतावरि, खिरैटी, पियावाँसा, चिरचिटा, रास्ना, गिलोय और कोंछ, यह प्रत्येक ४०० चारसौ तोले, जौ कुलथी बेर यह२५६दो सौ छप्पन तोले लेवै, इन सबको १८ द्रोण जलमें पकावै, जब १०२४ एक हजार चौवीस तोले जलकी रहै तब १०२४ एक हजार चौवीस तोले दूध, २५६ दो सो छप्पन तोले तेल, मूलीका रस २५६ दो सो छप्पन तोले, शुक्त २५६ दो सो छप्पन तोले, दहीका पानी दो सौ छप्पन तोले, कांजी दो सौ छप्पन तोले, और, दधिरस २५६ दो सो छप्पन तोले डालदेवै; कूठर, तगर, नागरमोथा, असवरग, मजीठ, वच, अष्टवर्ग

(कांकोली, क्षीरकांकोली, मेदा महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि), नल, धूपसरल, कचूर, बोल, मैनफल, त्रिजात, मुलैठी, सिंगाडे, शिलारस, नागकेशर, पीपल, नखद्रव्य, हलदी, दांत, देवदारू, अजवायन, अजमोद, वालाछड, षट्कटु, जीरा, कमलकीडंडी, कमल, वायविडंग, चोरद्रव्य, काकडाशिङ्गी, कसेरू, जवाखार, अगर, पुष्करमूल, रास्ना, केसर, सैंधानोन, सौंफ, और चन्दन, यह प्रत्येक औषधि दो दो तोले डालै,जब तेल सिद्ध होजाय तब सेवन करै इससे जृम्भ (जँभाई) उद्गार, जरा, वातरक्त, क्षय, शूल, अपस्मार, अस्थिभंग, उरःक्षत, अफारा, उन्माद, भ्रम, वातरोग, कर्णरोग, शिरोरोग, त्वचारोग, वीर्यरोग, आर्त्तवरोग और वाणीके रोग दूरहोतेहैं ॥ १ ॥ २ ॥

माषतैल ।

माषेमासणबीजसैर्यकयवक्षुद्रात्रिकंटर्षभी-
कार्पासास्थिकुलत्थटिंटुबदराजक्काथमस्त्वम्लकैः३
व्योषोग्रामिशिसिंधुगालसरणी रास्नानताश्वारुणा-
पाठाकिंजविशाखपुष्करबलाचीडासुराजाक्षुरैः ।
साच्छिन्नारुबुमाषतैलमवबाह्ववांगशोषापता
नाक्षेपाढ्यमरुत्रिकावयवरुग्दोमूर्धकंपार्दितम् ४

अर्थ–उडद, अलसी, सनकेबीज, कटसैरया, जौ, कटेहरी, गोखरू, किवांच, कपासकेबीज, कुलथी, करीरकीजड, बेरीकीछाल, और मांसका काढा, दहीका पानी, काँजी; यह सब एकत्रकर इनमें त्रिकुटा, वच, सौंफ, सौंधानोन, मैनफल, प्रसारन, रास्ना, तगर, असगंध, मजीठ, पाढ, कमलकीकेशर, पुनर्नवा, पोहकरमूल, खिरैटी, चीढ़, देवदारू, अजमोद

गोखरू, गिलोय और अंडीका तेल मिलाकर सिद्धकरै, यह तेल–अपबाहु, एकांगवायु, शोष, अपतानकवायु आक्षेपवायु, आढ्यावात, पीठकेबाँसकी संधियोंका शूल, हाथपाँवकी, पीडा और मस्तककी कंपको हरैहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

क्षारतैल।

क्षारोमूलकभस्महिंगुमिशिरुक्छुंठीत्रिपट्वौद्भिदं
भूर्जग्रंथिसुरोद्राशिग्रुरसजाब्दं तेन भिन्नैश्चतुः ॥
रंभांभोमधुसुक्तपूरकरसैःस्यात्क्षारतैलंश्रवा-
र्तौवातासृजितैलपिंडमरुणागोपीमधूत्थक्षणैः॥५॥

अर्थ–जवाखार, सज्जी, मूलीकीभस्म, हींग, सौंफ, कूठ, सोंठ त्रिलवण (कालानोन, सैंधानोन, बिडनोन) भोजपत्र, देवदारु, रेहगमानोन, पीपलामूल, वच, सौंजिनेकीछाल, रसोत और नागरमोंथा, इनका कल्क, केलेकारस, सहत, काँजी और बिजोरेकारस इन प्रत्येकको चौगुने रसमें तेलको पकावै; यह तेल–सर्वप्रकारके कर्णरोगोंको हरैहै ॥ मजीठ, सारिवा, सहत और रास्नाका बनायाहुवा तेल–वातरक्तको हरैहै ॥ ५ ॥

शतावरीतैल।

काणाश्वामिशिमांसिवृद्धनतरुङ्मेदाविशाखारुणा
रास्नैलोग्रवलास्थिराहिमसुरैस्तुल्यैर्वरीवारिणि ।
क्षीरेचाद्रिरभीरुतैलमनिलव्याधौखुडेवर्ध्मनि
क्षीणेकुष्ठजरास्यशोषबधिरव्यंगास्रापित्तज्वरे ॥ ६ ॥

अर्थ–सारिवा, असगंध, सौंफ, बालछड, विधारा, तगर, कूठ, मेदा, सोंठ, मजीठ, रास्ना, वच, खिरैटी, सालवण, चन्दन और देवदारु यह सब औषधि समानभाग लैवै, सतावरिका रस, दूध, यह दोनों तेलसे दुगनेले इन सबमें तेल डालकै

पकावै, सिद्धहोनेपर उतार लेवै; यह तैल - वातव्याधि, वात-रक्त, बद, क्षीणता, कोढ, जरा, शोष, बधिरता, व्यंग रुक्त-पित्त, और ज्वरको हरैहै ॥ ६ ॥

वज्रतैल।

भार्ङ्गीनीपौषधपटुशिलास्वर्णदुग्धाकदंबः
स्त्रीनिर्गुंडीदधिसुररुबुश्रीपुरैंद्रयब्दताक्ष्यौं ।
तुल्यैर्कस्नुक्पयसिरजनालानलेवज्रतैलं
हंत्यर्शोरुग्गतिचलकफत्वग्गदग्रंथिमालाः ॥ ७ ॥

अर्थ-भारंगीकी जड, कदंबकीछाल, सोंठ, सैंधानोन, मन-शिल, सत्यानाशीकटेहरी, राजकदंबकीछाल, फूलप्रियगू, निर्गुण्डी राल, देवदारु, अंडकी जड, बेलकीजड, गूगल, इन्द्रायण, नागरमोथा, रसौत, कवीला, हरताल और भिलावां, यह सब औषधि समान भागले कल्क बना थूहरके दूधमें मिलाके तेल सिद्धकरै; यह तैल-बवासीर,व्रण, वात, कफ, कोढ़, और गंड-मालाको दूर करैहै ॥ ७ ॥

नारायणतैल।

पंचांघ्रित्रयपारिभद्रबलिकाश्वासारणींवार्वहे
पण्यूनादशपालिकाःपचघटेतैलाढकंव्याघ्रिकैः ।
रुग्वृश्चीवामिशीजटापटुचतुष्पर्णीनतैलाहिमो-
ग्राश्वावृद्धरसासुरैः समवरीतोयंचतुर्गोपयः ॥ ८॥
कन्याकंठहनुग्रहज्वररदात्यैकांगशोषेंद्रिय-
भ्रंशेवर्ध्मानिवातरोगिषुनराश्वेभेषुनारायणम् ॥

अर्थ-तीनपंचमूल,(मध्यमपंचमूल, लघुपंचमूल, बृहत्पंचमूल), नीम, कंधी, असगंध, प्रसारन इनसब औषधियोंमें-से मुगवन, मषवन, शरिवन और पिठवन यह चार औषधि

छोड, शेषरही औषधि, चालीस चालीस तोलेले ४०९६ चार हजार छियानवैतोले पानीमें डालकै पकावै, जब जल चौथाभाग अर्थात् १०२४ एकहजारचौवीस तोले शेषरहै तब २५६ दोसोछप्पन तोले तेल, कूठ, पुनर्नवा, सौंफ, वाल, छड, सैंधानोन, सरवन, पिठवन, मुगवन, मषवन, तगर-इलायची, चन्दन, वच, असगंध, शिलाजीत, रास्ना और देवदारु, यह प्रत्येक औषधी आठ आठ तोले कल्कबना काढेमें डालदेवै, सतावरिकारस २५६ दोसौ छप्पनतोले. और गायकादूध १०२४ एकहजार चौवीसतोले डालकै तेल पकावै, यह तेल--मन्यास्तम्भ शोष, इन्द्रियोंकानाश, गलग्रह, हनुग्रह, ज्वर, दन्तपीडा, अर्द्धांग, बद और सबप्रकारके वातरो-गोंमें हितकारीहै, मनुष्य, घोडे और हाथियोंकेभी रोगोंको यह नारायणतैल दूर करदेहै ॥ ८ ॥

बलातैल।

युग्पंचांघ्रिकुलत्थकोलकयवास्तंलबलांभःपयों-
शाःषट्षट्तदिदंपचेत्पटुवरीरक्ताविदारीनतैः॥९॥
गोपीयुङ्मिशिदारुजीवनबलावृद्धात्रिजातागरु-
श्रेष्ठाबोलविशाखसर्जसरलोग्राश्वाजटारुग्घमैः।
सूतीबालमरुद्धगार्त्तिषुबलातैलंज्वरोन्मादयो-
र्मूत्राघातहतास्थिमर्मकसनेगुल्मांत्रवृद्धिक्षये॥१०॥

अर्थ–दशमूल, कुलथी, बेर और जौका काढा एक भाग, तेल एक भाग, खिरैटीका रस छै भाग, और दूध छै भाग ले, सबको एकत्रकर पकावै, फिर इसमें सैंधानोन, सतावरी, मजी-ठ, विदारीकन्द, तगर, सारिवा, सोंफ देवदारु, जीवनीयगण, खिरैटी, भूरिछरीला, त्रिजात, अगर, त्रिफला, बोल, पुनर्नवा,

राल, धूपसरल, वच, असगंध, वालछड, कूठ और चन्दनका कल्क डालकै तैल बनावै यह तैल-सूतिकारोग, बालरोग, वातव्याधि, ज्वर, उन्माद, मूत्राघात, अस्थिभंग, मर्माघात, खांसी, गुल्म, अंत्रवृद्धि, और क्षयरोगको हरै है ॥ ९ ॥ १० ॥

अन्वासनतैल ।

वात्याह्वोग्रामिशिसटिकणायष्टिदार्वग्निरुश्री-
राठैर्मूढाञ्जयातिमरुतोद्धिःपयोन्वासतैलम् ।
विविश्यतौसृतिरुजिगुदेवंक्षणानाहपिच्छा-
सृक्कृच्छात्युत्थितिमलरुधिश्रेणिपृष्ठोरुदासे ।११।

अर्थ-खिरैटी, वच, सौंफ, कचूर, पीपल, मुलैठी, चीता, कूठ, बेलगिरी और मैनफल, इनका कल्क करै, कल्कसे दुगना दूध लेवै, सबको तेलमें विधिपूर्वक तेल सिद्धकरै, इस तेलके द्वारा अनुवासनबस्ति करै तौ मूढ़ वायु, प्रवाहिका, शूल, अतिसार, गुदाकीपीडा, घुटनोंकी संधियोंकी पीडा, आनाह, मलरोध, वारंवार मलप्रवृत्ति और नितंब तथा पीठके बाँसकी पीडा दूर होतीहै ॥ ११ ॥

षड्बिन्दुतैल ।

त्वग्जीवामधुवेल्लसिंधुनतयष्ट्यैरंडरास्नामिशि-
विश्वैर्भृंगकतैलदुग्धमितिषड्विंदूर्ध्वरुङ्नावनम् ॥

अर्थ-दालचीनी, जीवन्ती, महुवेकेफूल, वायविडंग, सैंधानोन, तगर, मुलैठी, अंडकीजड़, रास्ना, सौंफ, और सोंठ इन औषधियोंके कल्कको भाँगरेके रसमें तेलके साथ पकावै, इस तेलको नाकमें डालनेसे सब प्रकारके वातरोग दूर होतेहैं ॥

मूर्वादितैल ।

मूर्वासर्जिगदारुणाजतुनिशाविश्वैस्तुषट्कटरं
यज्जीर्णज्वरदाहशीतशमनंतैलंतदभ्यंगतः ॥ १२ ॥

अर्थ–मूर्वा,सज्जी, कूठ, मजीठ, पीपलकीलाख, और सोंठ, यह औषधि समानभाग ले, और तेलसे छै गुना दहीका रस ले इनमें तैलको पकावै, इस तेलके द्वारा अभ्यंग करनेसे जीर्ण ज्वर, दाह और शीत दूर होताहै ॥ १२ ॥

लाक्षातैल ।

रक्तापीतोत्पलहिमबलागोक्षुरिकारिष्टयष्टी-
लामज्जांभोदधिजतुतुषाम्भःपयःशुक्तकुंभैः ।
मूर्वारास्नामिशिसुरबलायष्टितिक्तारुणाब्दा-
रुक्कौंत्यब्दाद्विनिशिनलदोशीरपद्माह्वशीतैः १३॥
लाक्षातैलात्त्वचरिपुनखीनम्रपुंड्रैश्चपात्रं
गर्भेबालेज्वरचलगदेंद्रग्रहश्वासदाहे ॥

अर्थ–मजीठ, हलदी, कमल, चन्दन, खरैटि, गोखरू, नीमकी छाल, मुलैठी, और लामज्जकतृण, इन सबका काढा १०२४ एकहजार चोवीस तोले, दही १०२४ एक हजार चोवीस तोले, लाखका रस १०२४ एक हजार चोवीस तोले, कांजी १०२४ एक हजार चोवीस तोले, सूक्त एक हजार चोवीस तोले ले, इन सबको एकत्र करें, मूर्वा, रास्ना, सोंफ, देवदारु, खिरैटी, मुलैटी कुटकी, मजीठ, रेणुका नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी, बालछड, खस, पद्माख, चन्दन, दालचिनी, अजवायन, नखद्रव्य, वैंत और पुण्ड्रीक (पुंडेरिया), इनका कल्कबना पूर्वोक्तमें, मिलादेवै, और २५६ तोले तेल मिलाकर पकावै, जब वह तेल सिद्ध होजाय तब उतारलेवै यह तेल–गर्भिणी, बालज्वर, वातरोग, राजयक्ष्मा, ग्रह, श्वास और दाहमें हितकारी है ॥ १३ ॥

गुडूच्यादितैल ।

छिन्नारास्नाक्षुरवरिबलासारणीसैर्यकाश्वा-
कल्कंक्वाथःपयसिपवनघ्नानितैलानिवार्यौ ॥ १४ ॥

अर्थ--गिलोय, रास्ना, गोखरू, सतावरि, खिरैटी, प्रसारन, पियावाँसा और असगंध, इन सबका कल्कबना प्रत्येकके काढे और दूधमें तेल पकावै यह तेल सब प्रकारके वातरोगोंको हरै है ॥ १४ ॥

महानीलतैल ।

काश्मर्यर्जुनपुष्पजांबवहिमश्यामारुणायोवरा-
पिण्डीताग्निकणाशनोत्पलमृणालपंकनीलयंजनैः
भल्लाम्रास्थिकसीसपुण्ड्रमदयंतीवाकुचीबिल्वकै-
स्तुल्यैर्द्वीसणबीजसौरसदलार्कैष्टाकमातासुरैः १५॥
यष्टीभृंगकुरंटकश्वसितिभिर्दंधेक्षतैलंमहा-
नीलंधात्र्युदकेर्कतोयसिपचेज्जत्रूर्ध्वकेशातिषु ॥

अर्थ—कुम्भेर और अर्जुनकेफूल, जामुन, चन्दन, फूलप्रियंगु, मजीठ, अगर, त्रिफला, तगर, चीता, पीपल, असनकीछाल, कमल, कमलकीडंडी, कर्दम (कौचँ), नील, सुरमा, भिलावा, आमकीगुठली, कसीस, पुण्ड्रीक, मोतिया, वापची और लोध, यह सब औषधि समान भागलेवै, सनकेबीज, तुलसीकेपत्ते, आदित्यभक्ता, इन्द्रायन, देवदारु, मुलैठी, भाँगरा और पियावाँसा; यह औषधि दुगनीलेवै, फिर सबको एकत्रकर बहेडेके तेलमें मिला उसमें नीलका पंचांगडाल फिर सबको लोहेके वासनमें कर आमलेका रसमिला धूपमें धरदेवे, जब खूब गरम होजाय तब अग्निसे पकावै; यहतेल—केशोंको कृष्णकरैहै और मस्तकके रोगोंको हरैहै ॥ १५ ॥

ब्राह्मीतैल।

ब्राह्म्यंभोर्कपयःशकृद्रसकटुस्नेहंविषेणापचौ
कुम्भाब्दौषणरात्रियुक्सुराहिमैर्द्विर्मूत्रपिष्टैःपचेत्॥१६॥

अर्थ–ब्रह्मीकारस, आकका दूध, गोवरकापानी, और सरसोंका तेल ले सबको एकत्र करले, वत्सनाभ, निसोत, नागरमोथा, कालीमिरच, हलदी, आमियाहलदी, और चन्दन, इन सबको दुगने गोमूत्रमें पीस पूर्वोक्तमें मिलाकै तेल पकावै, यह तेल–अपचि, और गंडमालादिरोगोंको नष्टकरैहै ॥ १६ ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतायां बोपदेवकृतशतश्लोक्याश्चंद्रप्रभानाम्न्यां भाषाटीकायां तैलाधिकारः समाप्तः ॥ ५ ॥

अथक्वाथाधिकारः।

महाक्वाथ।

ब्राह्मीरुग्यष्टितिक्तेंद्रजखदिरवृषोशीररक्तापटोली
छिन्नोग्रापद्मकैंद्रींद्रहिमवृकिविषापर्पटारिष्टमूर्वा।
गोप्यौभूनिंबकुंभाग्र्यसनवरिनिशेरोहिणीशिग्रुदंती
त्रायंतीयासविश्वार्ग्वधकृमिहवराब्देन्दुलेखांबुरुष्कः१
शुद्धोमूत्रेंदुराजीपुरपृथग्वाकृतैःक्वाथउक्तो
विस्फोटश्वित्रकुष्ठव्रणकृमिखुडवीसर्पमेहज्वरेषु ॥

अर्थ--ब्रह्मी, कूठ, मुलैठी, कुटकी, इन्द्रजौ, खैरकीछाल, अडूसा, खस, मजीठ, कडवेपरवल, गिलोय, वच, पद्माख, इन्द्रायन, कुडेकीछाल, चन्दन, पाढ, अतीस, पित्तपापडा, नीमकीछाल, मूर्वा सारिवा, श्यामालता, चिरायता निसोत, चीता, असन,

सतावर, हलदी, दारुहलदी, हरड, सैाजिना, दन्ती, त्रायमान, जबासा, सोंठ, अमलतास, वायविडंग, त्रिफला, नागरमोथा, वापची, सुगंधवाला और भिलावा; यह सब औषधी समान, भागलेवे, इन सब औषधियोंको सोलह गुने पानीमें औटा- वै, जब आठमा भाग जल शेष रहै तब उतारले, फिर इसमें गोमूत्र, बापची और गूगल डालके पियेतौ विस्फोटक, व्रण, कृमि, वातरक्त, श्वित्रकुष्ठ, विसर्प, प्रमेह और ज्वर दूर होवै अगर, गूगल, बापची और गोमूत्रका क्काथ बनाकर पियैतोभी उपरोक्त रोग दूर होते हैं ॥ १ ॥

त्रिरास्नादिक्काथ ।

त्रैरास्नंसैर्यंयासाब्दरुबुवृषविषाश्वव्यवृश्चीवकृष्णा-
व्याघ्रीयुग्दारुधान्योग्रामिशिवरिबलावेल्लरीविश्वपथ्यं२
छिन्नासाव्यग्र्वधाश्वाक्षुरयुतमनिलेसन्धिमज्जास्थिचाभा
मुंडीदीप्यादिशुण्ठन्यतमकरजसाजानुजंघाहनूरू ।
खल्लीपक्षार्त्तिखर्वामपवनचलनश्लीपदंकोष्ठशीर्ष
स्वापाश्वौर्वध्मगुल्मार्दितखुडनहनेकुब्जहृद्बीजरोगे ३॥

अर्थ–रास्ना तीन भाग, पियावाँसा, जवासा, नागरमोथा, अंडकीजड, अडूसा, अतीस, चव्य, पुनर्नवा, पीपल, कटेहरी, कटाई, देवदारु, धनिया, वच, सोंफ, सतावरि, खिरैठी, विधा- रा, सोंठ,हरड, गिलोय, कचूर, अमलतास, असगंध, और गोख- रू, यह सब एक एक भाग लेकर इनका क्काथ करै, आभादिचूर्ण, मुण्ड्यादि चूर्ण, दीप्यादिचूर्ण, और सोंठका चूर्ण, इन चूर्णोंमें किसीएक चूर्णके साथ खानेसे-वातव्याधि, संधिगतवायु,मज्जा- गतवायु, अस्थिगतवायु, जानुगतवायु, जंघागतवायु, गलप- टोंकीवायु, ऊरुदेशकीवायु, खल्लीवायु, पक्षाघात, खुजली, आमवात, कम्पवायु, श्लीपद, क्रोष्ठशीर्ष, निद्रा, बवासीर,

वायगोला, गोला, बद, गुल्म, अर्दितवातरोग, वातरक्त, कुबडापन, हृदयरोग, शुक्रदोष और आर्त्तव रोग दूरहोतेहैं ॥२॥३॥

मूर्वादिक्काथ।

मूर्वाभार्ङ्गींद्रजकटुकबरिस्नुग्विषाषट्कटूग्रा-
जीरेकौंतीन्द्रजफलवृकीवेल्लहिंग्वेलदीप्यम्।
द्रेक्कोतिक्तारलुचलकफेगुल्ममेदःप्रतिश्या-
मेहार्शोल्पानलकृमिरुजाढ्यानिलाध्माज्वरामे ॥ ४ ॥

अर्थ–मूर्वा, भारंगी, कुडेकीछाल, सरसों, अजमोद, थूहर, अतीस, षट्कटु, वच, जीरा, रेणुका, इन्द्रजौ, पाढ, वायविडंग, हींग, इलायची, अजवायन, वकायन, कुटकी, श्योनाक, और मैनफल, यह सब औषधि समान भागलेकर हींगकी वासनादे, बाकी औषधियोंका क्काथ बनावै, यह क्काथ वातरोग कफ, गुल्म, मेद, प्रतिश्याय, प्रमेह, बवासीर, मन्दाग्नि, कृमिरोग, आढ्यवायु आध्मान, और आमज्वरको नष्ट करैहै ॥ ४ ॥

दार्वादिनिरूह।

दारुच्छिन्नाश्वगंधार्ग्वधमदनबलाह्रस्वपंचांघ्रिरास्ना
वृश्चीवंपालिकांत्रिःसहिरुबुसलिलंव्याढकेष्टांशशेषे।
सीताक्षांब्देंद्रजोग्रामिशिकणहपुषायाष्टिकर्षैर्निरूहो
रुग्गुल्माशोंश्मवध्मग्रहणिषुपवनेसर्वगेधोविशेषात् ॥

अर्थ–देवदारु, गिलोय, असगंध, अमलतास, मैनफल, खिरैटी, लघुपंचमूल, रास्ना, सोंठ, यह प्रत्येक चारचार तोले लेवै, कचूर और अंड १२ बारह तोले लेवै, फिर सबको १०१२ एकहजार बारह तोले पानीमें पकावै, जब आठमा भाग

पानी बाकी रहै तब उतारले, फिर इसमें फूलप्रियंगू, नागरमोथा, इन्द्रजौ, वच, सौंफ, पीपल, हाऊवेर, और मुलैटी इनका एक एक तोला चूर्ण डालदेवै पीछै इसके द्वारा निरूहबस्ति देवै तौ शूल, गुल्म, बवासीर,पथरी, बद, संग्रहणी, सर्वांगवायु और अधोवायुको हरैहै ॥ ५ ॥

द्राक्षादि ।

द्राक्षापद्मकवृद्धिजीवनतुगाशृंग्यर्द्धिपुण्ड्रामृता-
स्तन्यःप्रीणनवृष्यबृंहणमरुत्पित्तप्रणुज्जीवनः ॥

अर्थ–दाख, पद्माख, वृद्धि, जीवनीयगण, वंशलोचन, काकडाशिंगी, ऋद्धि, पुण्डेरिया और गिलोय इनका काढा स्त्रियोंके स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करैहै; तृप्तिकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, वात और पित्तको दूरकर जीवनको बढावै ॥

भूनिंबादि ।

भूनिंबाब्ददशांघ्रिदार्विभकणातिक्तेन्द्रजाह्वौषधं
मूर्च्छातंद्यरुचिप्रलापकसनश्वासेषुसर्वज्वरे ॥ ६ ॥

अर्थ–चिरायता, नागरमोथा, दशमूल, देवदारु, गजपीपल कुडाकी छाल, इन्द्रजौ धनियाँ और सोंठ इन सब औषधियोंका क्वाथ–मूर्च्छा, तन्द्रा, अरुचि, प्रलाप, खाँसी श्वाँस, और सर्वप्रकारके ज्वरोंको हरैहै ॥ ६ ॥

विषाण्यादिक्काथ ।

मेदोक्षुद्गुल्मविद्रध्यनिलकफशिरार्त्तौविषाण्यग्निशैर्यौ
व्याघ्र्यौश्रीदर्भमूर्वाऽर्गटवरणवरीशिग्रुमंथौकरंजैः ॥

अर्थ–काकडाशिंगी, चीता, पीलेफूलकी कटसरैया, सफेदफूलकीकटसरैया, कटेहरी, बडी कटेहरी, बेलगिरी, दाभ, चुरनहार, कालेफूलकी कटसरैया, वरना, सतावर, सैंजिनेकी

छाल, दोनोंप्रकारके चकवड और दोनों प्रकारकी करंज, इन औषधियोंका क्वाथ–मेद, मन्दाग्नि, गुल्म, विद्रधि, वातरोग, कफरोग और मस्तककी पीडाको हरैहै ॥

श्रृंग्यादिक्वाथ ।

श्रृंग्युग्रापर्पटःकट्फलतृणसुरभाङ्गर्यब्दविश्वाभयाह्वा कासश्वासास्यरोगज्वरबलकफहृत्कुक्षिपार्श्वार्तिशोफे७

अर्थ–काकडाशिंगी, वच, पित्तपापडा, कायफल, रोहिषसौधिया, देवदारु, भारंगी, नागरमोथा, सोंठ, हरड, और धनियाँ, इन सबका क्वाथ--खाँसी, श्वाँस, मुखरोग, ज्वर, बलहानि, कफ, कोखका दर्द,पसलियोंका शूल, और सूजनको दूरकरैहै७

पथ्यादिर्हिमादिश्च ।

पथ्याग्रंथ्यब्दतिक्तार्ग्वधमनिलकफार्त्तिज्वरामेहिमाह्वाच्छिन्नापद्माह्वनिंबज्वरवमिकफतृड्पित्तदाहक्षुदामे ॥

अर्थ–हरड, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, और अमलतासकाक्वाथ, कफज्वर, शूल और आमज्वरको हरैहै । लालचंदन, धनियाँ, गिलोय, पद्माख और नीमकी छालका क्वाथ; ज्वर, बमन, कफ, तृषा, दाह, मंदाग्नि और आमदोषको हरैहै ॥

अतिविषादिकषाय ।

सास्रेसाक्षुद्विबंधेज्वरवातिसरुगामातिसारे“ विषांबुश्रीद्रोब्दं” श्रीबुधानौषधममृताविषाब्देन्द्रभूनिंबविश्वा८

अर्थ–अतीस, सुगंधवाला बेलगिरी, इन्द्रजव और नागरमोथेका क्वाथ–रक्तसहित अथवा शूलसहित आमातीसार और मलबंधको दूर करैहै । गिलोय, अतीस, नागरमोथा, कुडेकीछाल, चिरायता और सोंठका क्वाथ ज्वरको हरैहै ॥ ८ ॥

मुस्तादिक्काथ ।

मुस्ताशिग्रुवराखुपर्णिकलिमंसावेल्लकृष्णःकृमौ

अर्थ--नागरमोथा सैंजिनेकीछाल, त्रिफला, मूषाकानी और देवदारुके क्काथमें वायविडंग और पीपलके चूर्णको बुरकर पीनेसे सर्वप्रकारके कृमि रोग दूर होजाते हैं ॥

गोक्षुरादिक्काथ ।

कृच्छ्रार्त्तौसरुधिक्षुराग्र्वधशिवायासाश्मभित्सोपलम् ।

अर्थ–गोखरू, अमलतासका गूदा, जवासा और पाषाणभेदके क्काथमें बूरा डालकर पीवैतो मूत्रकृच्छ्र, शूल, और मूत्रमें रुधिर आना बंद होताहै ॥

हरिद्रादिक्काथ ।

विस्फोटज्वरशीतपित्तविषवीसर्पैमसूर्यांनिशा-
युक्सप्ताह्वपटोलवेत्रखदिरोरिष्टाब्दवासामृतम्॥८॥

अर्थ–हलदी, दारुहलदी, सतवन, कडवेपरवल, वेत, खैर, नीमकीछाल, नागरमोथा, अडूसा, और गिलोयकाक्काथ-विस्फोट, ज्वर, शीतपित्त, विषदोष, विसर्प, और मसूरीकारोगको दूर करैहै । ॥ ८ ॥

दीप्यादिक्काथ ।

दीप्यौरोहिण्यजाज्यौपृथ्विमिशिखदिरस्वर्णिमोचोत्तमाह्वा
वंशत्वग्ध्यामपूमासनमितिसरसंस्त्रीप्रसूसद्यःसुतासु ॥

अर्थ–अजवायन, अजमोद, कुटकी, जीरा, कालाजीरा, कालीजीरी, हिंगुपत्री, सोंफ, खैरसार, हलदी, ऊंटकटीरा, त्रिफला, धनिया, बांसकीछाल, रोहिषतृण, सुपारी और असनके क्काथमें कालीमिरचोंका चूर्ण डालकै तत्कालकी प्रसव हुई स्त्री पीवैतौ अत्यंत गुणकरै ॥

दार्व्यादि ।

दार्वीभूनिंबभल्लीतिलवृषरसजाब्दंसमध्वस्रयोनौ ।

अर्थ–दारुहलदी, चिरायता, भिलावा, तिल, अडूसा, रसौत और नागरमोथेके क्वाथमें सहत डालकै पीवैतौ रक्तप्र-दर दूर होवै ॥

त्रिफलादि ।

श्रेष्ठाभूनिंबनिंबामृतवृषकटुकाकामलापांडुरोगे १०

अर्थ–त्रिफला, चिरायता, निमकीछाल, गिलोय, अडू सा, और कुटकीका क्वाथ कामला और पांडु रोगको हरै है ॥ १० ॥

चंदनादि ।

शीतोशीरबलाब्दपर्पटावषाधान्यंबुयासारलु-
च्छिन्नागर्भिणिसूतिकासुसरुजामास्रेतिसारेज्वरे ॥

अर्थ–लालचंदन, खस, खिरैटि, नागरमोथा, पित्तपापडा अतीस, धनिया, सुगंधवाला, श्योनाक और गिलोकाक्वाथ, गर्भिणी और सूतिकास्त्रीकू हितकरी है । तथा वेदना संयुक्त आमातीसार और ज्वरको दूर करै ॥

व्याघ्र्यादि ।

व्याघ्र्यौशुण्ठ्यमृतास्थिरक्षुरकिराताब्दंकफान्यज्वरे

अर्थ–कटेहरी, बडीकटेहरी, सोंठ, गिलोय, सालवन, पि-ठवन, तालमखाना, चिरायता और नागरमोथेका क्वाथ वि-ना कफके ज्वरमें हितकारीहै ॥

व्याघ्रीधात्र्यमृताब्दशुंठिसकणाक्षौद्रंज्वरेचासमे ।११।

कटेहरी, आमला, गिलोय और नागरमोथिका क्वाथ बना तिसमें सोंठ, और पीपलका चूर्ण डाल सहतके साथ पीवैतौ विषमज्वर, दूर होता है ॥ ११ ॥

शृंग्यादि ।

शृंगीव्याघ्रीपटुगणवराव्योषभार्ङ्गीसमूलै-
र्हिध्माश्वासोर्ध्वचलकसनेपीनसेविश्वभार्ङ्ग्यौः ।

अर्थ—काकडाशिंगी, कटेहरी, पंचलवण, त्रिफला, सोंठ, पीपल, काली मिरच, भारंगी, और अंडकी जड इनका क्वाथ सोंठ और भारंगीके चूर्णके साथ सेवन करनेसै हिध्म, श्वास ऊर्ध्ववात, खांसी, और पीनस रोगको हरैहै ।

यवादि ।

हिंगुस्वर्जित्रिकटुयवभूपुष्करैरामगुल्मा-
नाहाजीर्णज्वररुजियवैरंडशुण्ठीदशांघ्रिः ॥ १२ ॥

अर्थ—जौ, अंडकी जड, सोंठ, और दशमूलका क्वाथ, हींग, सज्जी, त्रिकुटा, जवाखार, और पौहकरमूलके चूर्णके साथ पीनेसे आम, गुल्म, आनाह, अजीर्ण और ज्वरको हरेंहैं ॥१२॥

व्याघ्र्यादि ।

कासश्वासज्वरेक्षुन्मरुदरुचिकफामेषुपार्श्वार्त्तिपित्ते
व्याघ्रीविश्वामृतापुष्करमिहसकणंत्र्यादिसार्त्तिप्रतिश्या

अर्थ--कटेहरी सोंठ, गिलोय, और पोहकरमूलका क्वाथ-खासी श्वास, ज्वर, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि, कफ और आमको हरैहै, इसीप्रकार कटेहरी, सोंठ और गिलोयकाक्वाथ पपिलके चूर्णके साथ पीनेसे उपरोक्तरोग, शूल और प्रतिश्याय रोग, दूर होताहै ॥

आटरूषकक्काथ।

पित्तेसासृग्दरेमृद्रसजमधुलतारोध्रवानाटरूषः

अर्थ–मट्टी, रसौत, फूलप्रियंगू और अड़ूसेके क्वाथमें सहत मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त और प्रदररोग दूर होताहै ॥

द्राक्षादिक्काथ।

द्राक्षादार्वीवराजात्यमृतमधुयवासंमुखस्थौमुखार्त्तौ

अर्थ–दाख, दारुहलदी त्रिफला, चमेलीकेपत्ते, गिलोय और जवासेके क्वाथमें सहत मिलाकर मुखमें रखनेसे मुखके रोग दूर होतेहैं ॥

तिलक्काथ।

भार्ङ्गीव्योषाज्यतिलगुड़तिलजवाःपुष्पनाशेस्रगुल्मे

अर्थ–भारंगी, त्रिकुटा, घी, तिल, गुड यह औषधि तिलके क्वाथमें डालके देवैतौ ऋतुमती भलेप्रकारसेहो और रक्तगुल्म दूरहोवै ॥

शुंठीक्काथ।

विश्वंहिंग्वौषधरुचकयुक्श्लेष्मवातात्यजीर्णे ॥

अर्थ–सोंठके काढेमें हींग, सोंठ और कालानोन डालकर पिवेतौ कफ, वायु और अजीर्ण दूरहोवै ॥

दूसराशुंठीक्काथ।

शुण्ठीछिन्नाब्दविषमतिसृत्यक्षुदामेग्रहण्यां

अर्थ–सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, और अतीसका क्वाथ– अतीसार, मन्दाग्नि आम और संग्रहणीको दूरकरैहै ॥

रास्नादि।

रास्नाछिन्नौषधरुबुसुरंचामसर्वांगवाते ॥ १४ ॥

अर्थ- रास्ना, गिलोय, सोंठ, अंडकीजड, और देवदारुका क्काथ- आमवात और अर्द्धांगवातको हरैहै ॥ १४ ॥

तीसराशुण्ठ्यादि ।

शोफेशुण्ठीकिरातंजरणवृकिनिशाव्याघ्रिपंचोषणाब्दैः

अर्थ-सोंठ और चिरायतेका क्काथ बना उसमें जीरा, पाढ, हलदी, कटेहरी, पंचकोल और मोथेका चूर्ण डालके पीनेसे-सूजन दूरहोतीहै ।

फल्ग्वादि ।

श्वित्रेफल्ग्वक्षवल्कंसगुडमलयुयुक्गुग्गुलुस्तुव्रणाग्र्या

अर्थ-कठूमर और वहेड़ेके क्काथमें गुड़ और वापची डालकर पिवेतौ कोढ दूरहोवै, त्रिफलेके काढेमें गूगल डालकै पिवेतौ व्रण दूरहोवै ॥

धात्रीक्काथ ।

मेहेधात्रीसपीतामधुः--

अर्थ-आमलोंके क्काथमें हलदी और सहतमिलाकर पीनेसे प्रमेह दूरहोवै ॥

छिन्नादि ।

अथमधुनामातिसारेज्वरासृक्

शूलेच्छिन्नाक्षुराब्दश्रियवरुबुरजः कांजिकास्विन्नपथ्या

अर्थ-काँजीमें हरड डालकर क्काथ बनावै; उसमें गोखरू, नागरमोथा, बेलकागूदा, जौ और अंडकीजडका चूर्ण वना, सहतके साथ पीवैतौ-आमातीसार, ज्वर और रक्तशूल दूरहोवै ॥ १५ ॥

पालिंद्यादि ।

पालिंदीसुवहाशिरीषरजनीभैलारुणाशीतानि-
शुण्डीशेलुविषे--

अर्थ-निसोथ, रास्ना, शिरस, हलदी, नागकेशर, इलायची, मजीठ, लालचंदन, निर्गुण्डीके पत्ते और लहसोडोंका काथ विषके दोषोंको हरेहै ॥

अमृतादि ।

मृतौषधवृकीतिक्ताब्दगोपीन्द्रजम् ॥
मूर्वातिक्तसुरंपयस्यविमले-

अर्थ-गिलोय, सोंठ, पाढ, कुटकी, नागरमोथा, सारिवा, इन्द्रजौ, चुरनहार, चिरायता, और देवदारुका काथ-स्त्रियोंके दूधको निर्दोष करैहै ॥

श्रृंग्यादि ।

हिध्मासुश्रृंगीसठी
विन्दापुष्करकोलमज्जबृहतीयुग्यासपथ्याकणा ॥१६॥

अर्थ-काकड़ाशिंगी, कचूर, बंदा, पोहकरमूल, बेरकीमींग-कटेहरी, कटाई, जवासा, हरड़ और पीपलका काथ हिध्म-रोगको हरैहै ॥ १६ ॥

इति श्रीमदायुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यविरचितायां बोपदेवकृत-शतश्लोक्याश्चन्द्रप्रभानाम्न्यां भाषाटीकायां क्वाथा-धिकारः समाप्तः ॥ ६ ॥

शेष.

कफेशीतंपित्तेदहनमनिलेरूक्षमितिय-
त्रिदोषीकोपस्यप्रवहणमसाधारणमदः ।
विमृश्यव्याधीनांमलबलवयःस्थानवशतः
प्रयोज्यंभैषज्यंस्वधिगतशतश्लोकभिषजा ॥ १ ॥

अर्थ-इस शतश्लोकी नामक ग्रंथ पढेहुए वैद्यको, कफ,शीत, पित्त, उष्ण, वायु, रूक्ष और त्रिदोषकी असाधारण स्वरूप व्याधियोंका मल, व्याधियोंका बल, रोगीकी अवस्था, रोगीका बल, देश तथा उसके रहनेके स्थानका भलेप्रकार विचार करके उक्त औषधियोंका प्रयोगकरना चाहिये ॥ १ ॥

दोषादूष्यानलबलवयःकालदेशर्त्ववस्था
सत्वंसात्म्यंप्रकृतिमसकृद्यः परीक्ष्यप्रयुंक्ते ।
योगंरोगेभिषगनलसस्तस्यासिध्यत्यभीष्ट
तस्मादेतल्लिखितपठिताधीनधीभिर्निबोध्यम् ॥२॥

अर्थ-इस ग्रंथमें कहे हुएके अनुसार गुरुमुखसे भये पाठका अनुसरण करनेवाली बुद्धिवाले पुरुषको इतना जानना चाहिये कि- वात, पित्त, और कफका दोष, अग्निका बल, अवस्था, काल, देश, ऋतु, रोगकी अवस्था, रोगका बल, रोगकी अनुकूलता, और रोगके स्वभावकी परीक्षा करकै स्वयं उपाय करनेमें आलस्य नहीं रखनेवाला जो औषधि देताहै उसका वांछित सिद्ध होताहै ॥ २ ॥

देशानांवरदातटंवरमतःसार्थाभिधानंमहा-
स्थानंदेवपदास्पदाग्रजगणाग्रण्यंसहस्रंद्विजाः ।
तत्रामीषुधनेशकेशवविदौवैद्यौवरिष्ठौक्रमा-
च्चक्रेशिष्यसुतस्तयोःकृतिमिमांश्रीबोपदेवःकविः॥३॥

अर्थ-सब देशोंमें वरदानदीका तट उत्तमहै, उसमें सार्थ नामवाले महान् स्थानोंमें स्वर्गवासी मुख्य देवताओंमें अग्रेसर एक सहस्र ब्राह्मण उत्तमहैं उनमें धनेश और केशवनामक दो महा विद्वान् उत्तम पंडितथे उन धनेशके शिष्य और केशवके पुत्र बोपदेवकविने यह ग्रंथ निर्माण कियाहै॥३॥

कैलासाचलमौलिमंडनमणेर्नृत्योत्सवे यद्यशो
गायंति त्रिदशांगनाः कलरणद्गंभीरतारस्वनैः ।
चक्रे चंद्रकलासुशोभितशतश्लोकीं पदोल्लासिनीं
स त्रैलोक्यकवीन्द्रवृंदतिलकः श्रीबोपदेवः कविः ॥ ४ ॥

अर्थ—कैलास पर्वतके मुकुटमणिरूप शंकरके नृत्योत्सवमें गंभीर और अव्यक्त स्वरवाली अप्सरा जिसके यशका गान करतीहैं, वह त्रैलोक्यमें कवीश्वरोंमें तिलक श्रीबोपदेवकविने चमत्कारवाले पदोंसे संयुक्त, चन्द्रकलाकी समान सुशोभित यह शतश्लोकी रचीहै ॥ ४ ॥

समाप्तोऽयं ग्रंथः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना.

(मुंबई.)

इति

बोपदेवशतक-

समाप्त ।

वैद्यकग्रंथाः।

नाम.	की. रु. आ.	ट.म.रु.आ.
३५९ हारीतसंहिता भाषाटीकासहित	३-०	०-८
३६० अष्टांगहृदय (वाग्भट्ट) भाषाटीका अत्युत्तम वैद्यकग्रंथ-भिषग्वरोंके देखने योग्य....	८-०	१-०
३६१ बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथमभाग	३-०	०-६
३६२ बृहन्निघंटुरत्नाकर द्वितीयभाग	३-०	०-६
३६३ बृहन्निघंटुरत्नाकर तृतीयभाग	३-८	०-८
३६४ बृहन्निघंटुरत्नाकर चतुर्थभाग	२-८	०-५
३६५ बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचमभाग छपता है....	०	०
३६६ रसराजसुंदर भाषाटीकासह	३-४	०-८
३६७ पथ्यापथ्यभाषाटीका	०-१२	०-१॥
३६८ शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं॰दत्तराम चौबे मथुरानिवासीका बनाया	३-०	०-६
तथा रफ्	२-८	०-६
३६९ अमृतसागर कोशसहित हिंदुस्थानी भाषामें सर्वदेशोपकारक	२-४	०-८
३७० डाक्टरी चिकित्सासार भाषा (अं. दे. वै.)	०-१०	०-१
३७१ चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग	४-०	०-१०
३७२ चिकित्साक्रमकल्पवल्ली संस्कृत काशिनाथकृत भिषग्वरोंके देखनेयोग्य	२-८	०-८
३७३ माधवनिदान उत्तम भाषाटीका ग्लेज	२-८	०-८
” रफ्	२-०	०-८
३७४ अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित....	०-८	०-२
३७५ हंसराजनिदान भाषाटीका	१-०	०-३
३७६ चर्य्याचंद्रोदयभाषाटीका(व्यंजनबनानेका)	२-०	०-४
३७७ योगतरंगिणी (बहुतही उत्तम)	२-०	०-[illegible]

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-(मुंबई)